Delhi Postal Regd. No. DL© -01/1272/2021-23 R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अर्हत उवाच

सव्वमेयं णिराकिच्चा, ते ठिया सुसमाहिए।
जो अनुकूल परिषहों को निरस्त कर देते हैं वे समाधि में स्थित हो जाते हैं।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 11 • 18-24 दिसंबर, 2023 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 16-12-2023 • पेज : 12 • ₹10 रुपये

शाश्वत सुख की प्राप्ति के लिए करें अध्यात्म की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

पाली हिल्स, १२ दिसंबर, २०२३

अणुव्रत यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी चार दिवसीय सांताक्रुज का प्रवास पूर्ण कर पाली हिल्स-खार क्षेत्र में पधारे। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने फरमाया कि हम लोग जो धर्म से जुड़े हुए हैं, यदा-कदा धर्म की चर्चा करते रहते हैं। प्रवचन-व्याख्यान व बातचीत में भी धर्म-अध्यात्म की चर्चा कर लेते हैं।

प्रश्न हो सकता है कि धर्म क्यों करना चाहिए? धर्म से क्या मिलेगा। आदमी कोई कार्य करने से पहले सोचे कि मैं ये कार्य क्यों करूँ, मुझे क्या लाभ मिलेगा? एक सैद्धांतिक बात है कि मैं कौन हूँ? शरीर के अलावा भी कोई चीज है, जिससे शरीर सक्रिय रहता है। यहाँ समाधान दिया गया है-वो चीज आत्मा है। यह धर्म और अध्यात्म का सिद्धांत है कि शरीर और आत्मा अलग-अलग चीज हैं।

आत्मा के कारण ही शरीर क्रिया करता है। दोनों का योग-मिश्रण ही जीवन होता है। शरीर नश्वर है, आत्मा को अमर-शाश्वत कहा गया है। वर्तमान शरीर की मृत्यु के बाद आत्मा का पुनर्जन्म होता है। मैं आगे पर भी ध्यान दूँ कि आगे मेरी आत्मा किस रूप में रह सकेगी। पुनर्जन्म में आत्मा सुखी रहे, इसके लिए धर्म और अध्यात्म की साधना करनी चाहिए।

सर्वदुःख मुक्ति का उपाय धर्म-अध्यात्म है। सुख दो प्रकार का होता है-भौतिक सुख और आध्यात्मिक सुख। भौतिक सुख थोड़ी देर का है। आध्यात्मिक सुख शाश्वत है। धर्म के तीन प्रकार-अहिंसा, संयम और तप हैं। अहिंसा महान धर्म है। हमारा वाणी, मन और शरीर पर संयम रहे। शुभ योग अपने आप में तप है। संवर-निर्जरा की आराधना करें। शाश्वत सुख की प्राप्ति के लिए धर्म-अध्यात्म की साधना करनी चाहिए।

जैसे मुझे सुख प्रिय व दुःख अप्रिय है, वैसे ही सब जीवों को सुख प्रिय व दुःख अप्रिय है। मैं कभी दूसरों की सुख प्राप्ति में बाधक न बनूँ। क्रोध न करें, झूठ न बोलें। जीवन में तप का भी आराधन हो। यह सब शाश्वत सुख प्राप्ति का साधन बन जाता है।

हमारा वर्तमान जीवन अच्छा रहे। सभी व्यक्ति साधु नहीं बन सकते हैं, पर सद्गृहस्थ तो बन ही सकते हैं। इससे जीवन में शांति रह सकती है। भौतिकता का उपयोग हो, पर मुख्य आध्यात्मिकता रहे। जीवन में धर्म की साधना कर परम सुख पाने का प्रयास करें।

बृहत्तर मुंबई का भ्रमण चल रहा है। यह चोरड़िया परिवार का परिसर है। सब में धार्मिक संस्कार पुष्ट रहें। पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी भी यहाँ पधारे थे। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि जब हम १९८३ में विदेश यात्रा पर समणी रूप में गए थे तो सारी व्यवस्था चोरड़िया परिवार की थी। समुद्र में गहराई है पर ऊँचाई नहीं है। पर्वत में ऊँचाई है, पर गहराई नहीं है। पर महापुरुष वे होते हैं, जिनमें ऊँचाई भी होती है और गहराई भी होती है। परमपूज्य आचार्यप्रवर के जीवन में ऊँचाई भी है और गांभीर्य भी है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मंजु लोढ़ा, मोहनी देवी चोरड़िया, विजय चोरड़िया, मफतराज मणोत ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

करुणासागर की प्रेरणा से मुस्लिम भाई-बहनों ने किया मांसाहार त्याग का संकल्प

ज्ञान और ज्ञानदाता के प्रति हो विनम्रता का भाव : आचार्यश्री महाश्रमण

सांताक्रुज, १० दिसंबर, २०२३

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि चतुरंग मोक्ष मार्ग है-ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। चारित्र का बहुत महत्त्व है। चारित्र के बिना मोक्ष नहीं मिलता। पर सम्यक्त्व विहीन चारित्र नहीं हो सकता। सम्यक्त्व तो चारित्रविहीन हो सकता है।

चारित्र की साधना के लिए सम्यक्त्व आवश्यक है, सम्यक् ज्ञान भी अपेक्षित है। अध्यात्म जगत में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन रहना चाहिए। दुनिया में ज्ञान की अनेक व्यवस्थाएँ हैं, अनेक शिक्षण संस्थान हैं। धर्म के क्षेत्र में भी ज्ञान का महत्त्व है। सदा स्वाध्याय में रहो। स्वाध्याय से ज्ञान निर्मल रहता है। अध्यात्म विद्या का ज्ञान करना चाहिए।

ज्ञान प्राप्ति के अनेक ग्रंथ हैं। ज्ञान प्राप्त करने के लिए समय, परिश्रम और भीतर में लगन हो तो प्रतिभावान व्यक्ति आगे बढ़ सकता है। ज्ञान एक आलोक है। जिसमें आत्म-साधना का पथ आलोकित हो सकता है। ज्ञान से एकाग्रता बढ़ सकती है, साधना ऊर्ध्वारोहण कर सकती है। चित्त की चंचलता कम हो सकती है। ज्ञान प्राप्त करके हम स्वयं को धर्म के मार्ग में स्थापित कर सकते हैं। दूसरों को भी धर्म के मार्ग में स्थापित कर सकते हैं।

ज्ञान और चरित्र दोनों का महत्त्व है। एक के बिना दूसरा अधूरा है। संवर-निर्जरा आदि धर्म-अध्यात्म विद्या के विषय हैं। ज्ञान प्राप्त करने वाला पात्र भी अनुकूल हो। ज्ञानशाला भी अध्यात्म विद्या का माध्यम है। ज्ञान और ज्ञानदाता के प्रति विनम्रता हो। स्वास्थ्य भी अनुकूल रहे।

हमारे धर्मसंघ में अनेक चारित्रात्माएँ व गृहस्थ जैन धर्म के अच्छे जानकार हैं। विद्या और आचार से मोक्ष मिलता है। गृहस्थों में अध्यात्म विद्या का ज्ञान बढ़े। ज्ञान बढ़ने से चारित्र निर्मल बन सकता है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि हमारा जीवन बड़ा सुंदर है इसकी उपयोगिता को बनाए रखने के लिए इंद्रिय-संयम रूपी बाड़ की अपेक्षा है। इससे आत्मा की सुरक्षा हो सकती है। इंद्रिय सुख क्षणिक होता है। जीवन का सार संयम में है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

✦ व्यक्ति यह ध्यान दे कि जीवन में बुराइयाँ न पनपें और जो बुराइयाँ जीवन में प्रवेश कर चुकी हैं, उन्हें छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।
आचार्य श्री महाश्रमण

पूज्यप्रवर ने एनसीसी केडेट्स को प्रदान की नशामुक्ति की प्रेरणा

धर्म है उत्कृष्ट मंगल : आचार्यश्री महाश्रमण

सांताक्रुज, ११ दिसंबर, २०२३

नशामुक्ति की जन-जन को प्रेरणा प्रदान करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि प्रश्न हो सकता है कि सबसे बड़ा मंगल क्या होता है? जो कल्याणकारी हो, परम सुख दिलाने वाला हो, विघ्न-बाधाओं का विनाशक हो।

कुछ पदार्थ गुड़ आदि का मंगल के रूप में आसेवन किया जा सकता है। शास्त्रकार ने कहा है, उत्कृष्ट मंगल धर्म होता है। धर्म भी अनेक है पर अहिंसा, संयम और तप उत्कृष्ट मंगल है, इसमें किसी भी धर्म को आपत्ति नहीं हो सकती है। यह त्रिआयामी उत्कृष्ट मंगल है।

आज चतुर्दशी है, हाजरी का वाचन होगा। काफी साधु-साध्वियाँ यहाँ विराजित हैं। साधु तो अहिंसा, संयम और तप से संयुक्त होते हैं। जैन साधुओं के लिए पाँच महाव्रत पालनीय होते हैं। साधु तो अकिंचन होते हैं। गृहस्थों के लिए भी छोटे-छोटे नियम अणुव्रत पालनीय होते हैं।

आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया था। जिसके संदर्भ में अणुव्रत अमृत महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। अणुव्रतों में व्यसनमुक्ति की बात भी बताई गई है। नशीली चीजों की आदत पड़ने से व्यक्ति व्यसनी हो जाता है। पहले आदमी नशीली चीजें खाता है, बाद में ये आदमी को खाने लग जाती हैं।

व्यक्ति को अगर नशे के नुकसान को पहले से समझा दिया जाए तो वह नशामुक्त रह सकता है। अगर कोई नशे की आदत में चला जाता है, तो उसे समझाकर नशामुक्त बनाने का यथोचित प्रयास हो। एनसीसी के अनेक केडेट व अध्यापक बैठे हैं, वे नशामुक्त रहने का संकल्प ले सकते हैं।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि जीवन में सही दिशा का ज्ञान होना जरूरी है। सही लक्ष्य का होना मानव जीवन में जरूरी है। हमारा लक्ष्य भी बड़ा हो, जो हमें मंजिल तक पहुँचाकर जीवन को सार्थक बना सके।

अणुविभा के तत्त्वावधान में ड्रग्स मुक्त भारत के अंतर्गत एक सम्मेलन Elevate - Experience the Real Life आयोजित हो रहा है। अणुव्रत के स्थानीय संयोजक अशोक कोठारी व सह-संयोजक मुदित भंसाली ने इस सम्मेलन के संदर्भ में जानकारियाँ दी। गायिका अनुराधा पौड़वाल ने सुमधुर गीत का संगान किया।

नेथरोलॉजिस्ट डॉ० विश्वनाथ, मुनि अभिजीत कुमार जी, डॉ० अजहर हकीम (फिजिशियन), मेजर जनरल योगेन्द्रसिंह, प्रवास स्थल एसएनडीटी यूनिवर्सिटी के चेयरमैन, अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर, सुमतिचंद गोठी, भूपेश कोठारी, अर्पित काबरा आदि ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

विवेकपूर्ण पुरुषार्थ है सफलता का आधार : आचार्यश्री महाश्रमण

सांताक्रुज, ९ दिसंबर, २०२३

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सांताक्रुज प्रवास के दूसरे दिन मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि वह माता शत्रु है, पिता दुश्मन है जो अपने बच्चे को पढ़ाते नहीं हैं। वे माता-पिता भी चाहे-अनचाहे बच्चे के साथ दुश्मनी करते हैं, जो अपने बच्चे को साधते नहीं हैं। संस्कारी और मजबूत नहीं बनाते हैं। अच्छी शिक्षाओं से संपन्न नहीं बनाते हैं।

अनपढ़ आदमी व्यापार करने में असमर्थ होता है। आदमी के जीवन में भाग्य का भी अपना योगदान होता है। पुरुषार्थ का भी योगदान होता है। जैन दर्शन में कर्मवाद का सिद्धांत है, जो भाग्यवाद से जुड़ा सिद्धांत है। पूर्व अर्जित कर्मों से बहुत सी सुविधाएँ मिल सकती हैं, तो कठिनाइयाँ और दुःख भी प्राप्त हो सकते हैं।

भाग्यवाद जानने की चीज है। करने की चीज पुरुषार्थवाद है। वह अभागा आदमी होता है, जो भाग्य भरोसे बैठा रहता है। पुरुषार्थ न करने वाला सामान्यतया अभागा आदमी होता है। जो पुरुषार्थशील होता है, लक्ष्मी उसके पास जाती है। पुरुषार्थ करने पर भी यदि सिद्धि नहीं मिलती है, तो उसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। विवेकपूर्ण पुरुषार्थ करना यह सफलता का एक आधार बनता है।

नियतिवाद भी एक सिद्धांत होता है, पर पुरुषार्थ करना आवश्यक है। उठो, जागो तो सफलता मिल सकेगी। महत्त्व-भूमिका अपनी-अपनी हो सकती है। शास्त्रों में तीन वणिक पुत्रों का दृष्टांत मिलता है। प्रथम वणिक पुत्र ने जुए में सारी पूँजी गँवा दी। दूसरा वणिक पुत्र भी ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था। पूँजी बैंक में जमा कर दी और ब्याज से काम चलाने लगा। मूल पूँजी सुरक्षित रखी।

तीसरा वणिक पुत्र अच्छा पढ़ा-लिखा था और भाग्य ने भी साथ दिया। व्यापार शुरू किया और अच्छी सफलता मिली। आर्थिक स्थिति से सुदृढ़ हो गया। बारह वर्षों बाद तीनों भाई मिले और गाँव पहुँचे। तीसरे भाई ने पूँजी को बहुत बढ़ा लिया। दूसरे ने मूल पूँजी सुरक्षित रखी तथा पहले ने तो मूल ही गँवा दी। यह एक दृष्टांत है।

हम इसे धर्म-अध्यात्म की दृष्टि से देखें। मानव जीवन एक पूँजी है, जो हमें मिली है। जो ज्यादा पाप कर्म करता है, वह नरक में जा सकता है। झूठ-कपट करने वाला तिर्यंच बन सकता है। यह पहले वणिक पुत्र के समान है, जिसने मूल मानव जन्म को गँवा दिया और नीचे चला गया। जो ज्यादा पाप या धर्म नहीं करता है, सामान्य जीवन जीता है, सरल है वह पुनः मनुष्य गति में पैदा हो सकता है। मूल पूँजी सुरक्षित रह गई।

एक आदमी जीवन में त्याग, तपस्या, संयम करता है, वह मरकर देव गति में उत्पन्न हो सकता है। उसने तीसरे वणिक पुत्र की तरह खूब कमाई कर मूल पूँजी बढ़ा ली। हमें महत्त्वपूर्ण मानव जीवन प्राप्त है। हम इस अवसर का लाभ उठाने का प्रयास करें। संयम और तप की साधना-आराधना करने का प्रयास करें।

सांताक्रुज में प्रवास हो रहा है। आज अजरामर आम्नाय की साध्वियाँ भी यहाँ आई हैं। साध्वी भक्तिकुमारी जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्वागत अध्यक्ष नरेश खाब्या, महिला मंडल, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी की सुंदर प्रस्तुति हुई। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञान और ज्ञानदाता के प्रति हो...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तेयुप, तेरापंथ किशोर मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल ने अपनी प्रस्तुति दी। तेयुप सांताक्रुज अध्यक्ष महेश परमार ने अपनी अभिव्यक्ति दी। संजय गुलेचा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। मुस्लिम समाज के अनेक भाई-बहन पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुँचे और आजीवन मांसाहार त्याग का संकल्प लिया।

आचार्यश्री ने टीपीएफ द्वारा आयोजित मेडिकल कैंप के संदर्भ में संबंधित लोगों को मंगलपाठ सुनाया। महराष्ट्र नवनिर्माण सेना राज ठाकरे की धर्मपत्नी शर्मिला ठाकरे ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए और अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी का धर्मचक्र तप संपन्न

शाहदरा, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने धर्मचक्र तप के अंतिम चरण का प्रत्याख्यान किया। संपूर्ण श्रावक समाज ने साध्वीश्री जी के तप का अभिवादन करते हुए तप की अनुमोदना की। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि तपस्या वह मशाल है, जो आत्म ज्योति को प्रज्ज्वलित कर ब्रह्मज्योति से साक्षात्कार करवा सकती है। तपस्या वह महापुष्प है, जो पूरे वातावरण को सुवासित कर देता है। तपस्या वह शंखनाद है, जो भीतर की चेतना को जागृत करता है। तपस्या वह नौका है, जो भवसागर से पार पहुँचा सकती है। धन्य हैं, वे तपस्वी जो तप रूपी आभूषण से अपने जीवन का शृंगार करते हैं। धन्य हैं, वे तपस्वी जो अपने तप से जिन शासन की नींवों को मजबूती प्रदान करते हैं। धन्य हैं वे तपस्वी जो अपने तप से संघ के गौरव को शतगुणित करते हैं। तपस्वी साधु-साध्वियों की शृंखला में एक नाम जुड़ा है–साध्वी मैत्रीप्रभाजी का।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी हमारे धर्मसंघ की वो साध्वी हैं, जिन्होंने लघुसर्वतोभद्र तप कर संघ की ख्यात में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित किया। आचार्य महाश्रमणजी के युग में साध्वियों में लघुसर्वतोभद्र तप करने वाली यह पहली साध्वी हैं। इन्होंने वर्षीतप, सिद्धितप, कंठी तप, प्रतर तप एवं धर्मचक्र तप कर अपने जीवन का तप से शृंगार किया है। दस तक की लड़ी, पखवाड़ा एवं एक साथ एक सौ आठ एकासन भी किए हैं। मैं यही मंगलकामना करती हूँ तप के क्षेत्र में वर्धमान रहती हुई, ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र को तेजस्वी बनाओ।

धर्मचक्र तप साधिका साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा कि मैं अत्यधिक सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे जिन शासन में भैक्षव शासन मिला है। आचार्य महाप्रज्ञ जी के करकमलों से मुझे संयम रत्न मिला एवं आचार्यश्री महाश्रमण जी के आशीर्वाद एवं ऊर्जा से तप के क्षेत्र में गतिमान हुई हूँ। मेरी तप की शक्ति को जागृत करने वाली मेरी अग्रगण्य श्रद्धेया साध्वी अणिमाश्री जी हैं। पहले मेरी ज्ञान चेतना को प्रकट कर मुझे डबल एम०ए० करवाया, उसके बाद तप में नियोजित किया। आपकी कृपा से ही मैं तपस्या कर पाई हूँ। साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी का भी आत्मीय सहयोग मुझे मिला। सबके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी ने वात्सल्यामृत का पान करवाकर मुझे अभिभूत कर दिया। मुनि नमि कुमार जी, मुनि अमन कुमार जी ने मुझे दर्शन दिए सभी के प्रति कृतज्ञता।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि साध्वी मैत्रीप्रभाजी संकल्प की धनी हैं। मनोबल व आत्मबल भी गजब का है। साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने कहा कि साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने विभिन्न प्रकार के तप कर कीर्तिमान बनाए हैं। छोटी वय में तपस्या कर अद्भुत इतिहास रचाया है।

साध्वी समत्वयशा जी ने विभिन्न राग-रागिनियों में तप की अनुमोदना की, जिसे सुनकर पूरी परिषद भावविभोर हो गई। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत का सुमधुर संगान किया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का संदेश प्राप्त हुआ। जिसका वाचन डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने किया।

इस अवसर पर उग्रविहारी, तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी का पदार्पण नई खुशिया लेकर आया। मुनिश्री के आगमन ने पूरे वातावरण को ऊर्जामय बना दिया। मुनिश्री ने तपस्विनी साध्वी मैत्रीप्रभा जी की तप अनुमोदना कविता द्वारा की।

मुनिप्रवर ने साध्वी अणिमाश्री जी के प्रति प्रमोद भाव व्यक्त करते हुए कहा कि आप चातुर्मास के बाद एम०पी० की ओर प्रस्थान करेंगी। आप पहली बार एम०पी० पधार रही हैं, आपके लिए नई भोर उदित होगी। यह चातुर्मास प्रथम पंक्ति में होगा, ऐसी मैं मंगलकामना करता हूँ।

साध्वी अणिमाश्री जी ने अहोभाव प्रकट करते हुए कहा कि आपश्री जो वात्सल्य की गंगा प्रवाहित करते हैं, उसमें अवगाहन कर हम बाग-बाग हो जाते हैं। आपकी प्रमोद भावना अनुकरणीय है। आपश्री ने जो मेरे लिए मंगलभाव व्यक्त किए हैं, वो मेरी निधि है। हम सब गुरु आज्ञा में रहते हुए संघ की प्रभावना करते रहें।

जीवन में सफलता की कुँजी है अनुशासन

चंडीगढ़।

जीवन में अनुशासन का एक अलग ही महत्त्व है। यह आदर्श जीवनशैली है, जिससे हर कार्य आसानी से संपन्न हो जाते हैं। अनुशासन के बिना मानव जीवन पशु तुल्य है। अनुशासन हमें देशभक्ति का पाठ पढ़ाता है। इससे हमारे व्यक्तित्व में निखार आता है और अनुशासित व्यक्ति ही समाज को एक नई दशा व दिशा प्रदान कर सकता है। जीवन में जो व्यक्ति अनुशासन में रहता है, समझो उसने जीवन को सही ढंग से निर्वाह करना सीख लिया है। यह शब्द मनीषी संत मुनि विनयकुमार जी 'आलोक' ने सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जो समाज में रहता है और समाज में रहने के लिए अनुशासन का होना बहुत ही आवश्यक है।

मुनिश्री ने कहा कि अनुशासन हमारे जीवन में सफलता की सीढ़ी है, जिस पर चढ़कर या उसके सहारे हम किसी भी मंजिल को अपने जीवन में हासिल कर सकते हैं। विद्यार्थी के जीवन में अनुशासन का बहुत महत्त्व है, क्योंकि यह वह पड़ाव है, जहाँ वह जीवन में सब कुछ सीखते हैं। अनुशासन के बिना मनुष्य का जीवन आधा-अधूरा है, जीवन में सफलता की कुँजी अनुशासन है। अनुशासन के आधार पर हमारे जीवन का भविष्य तय होता है। अनुशासन की राह पर चलना थोड़ा मुश्किल होता है, परंतु इस राह पर चलने के बाद मिलने वाला फल बहुत ही स्वादिष्ट और मीठा होता है। अनुशासन वह डोर है, जो हमें आकाश की बुलंदियों को छूने के लिए मदद करती है।

दो धाराओं का मधुर मिलन

दरियागंज, दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी व आचार्यश्री ज्ञानचंद जी का दरियागंज में मधुर मिलन में सामूहिक प्रवचन हुआ। प्रवचन करते हुए मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर स्वामी के २५५०वें निर्माण कल्याणक वर्ष का अवसर है। इस समय हम भगवान महावीर वाणी का ज्यादा से ज्यादा प्रचार करें, प्रवचनों के माध्यम से जन-जन को महावीर वाणी से परिचय कराएँ। भगवान महावीर का उपदेश आज भी उतना ही उपयोगी है, जितना हजारों वर्ष पूर्व उपयोगी था।

मुनिश्री ने कहा कि मनुष्य के जन्म से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण मनुष्यता है। आज मनुष्यता का अभाव होने के कारण भाई-भाई, पिता-पुत्र, सास-बहू, पति-पत्नी में तनाव-टकराव, दुराव बढ़ता जा रहा है। इसका एकमात्र उपाय मनुष्यता ही है। मानव जीवन के साथ मानवता का विकास हो, जिससे बढ़ती हुई समस्याओं का अंत हो सके।

आचार्य ज्ञान चंदजी ने कहा कि अगर हम 'परस्परोपग्रहों जीवानाम्' के सिद्धांत को समझकर सबका भला करने का प्रयत्न करेंगे तो हमारा भला स्वयं हो जाएगा। उन्होंने कई उदाहरण के साथ यह बताया कि अनेकांत सब समस्याओं का हल करने वाला है। उन्होंने कहा कि आज रत्नाधिक संतों से मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ, आचार्यश्री महाश्रमणजी से हुए मिलन की भी चर्चा की। कार्यक्रम की अंत में बड़ोत संघ के मंत्री तथा गांधीनगर तेरापंथ सभा के मंत्री हेमराज जैन ने भी अपने भावपूर्ण विचार प्रस्तुत किए।

जीवन विज्ञान दिवस का आयोजन

साउथ कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी व मुनि आदर्श जी का सामूहिक आध्यात्मिक प्रवचन आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि दुनिया में अनेक शक्तियाँ हैं–धन की, सत्ता की, अध्यात्म की। इन शक्तियों का अपना मूल्य है, लेकिन अध्यात्म की शक्ति सर्वश्रेष्ठ है। अध्यात्म जीवन की पवित्रता है। अध्यात्म किसी भी समाज की अमूल्य धरोहर होती है। आध्यात्मिक विकास के लिए भाव क्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री, मिताहार, मितभाषण आदि तत्त्व जरूरी है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि सब जीवों के साथ मैत्री भाव रखने वाला एक-दूसरे के हितों की सुरक्षा करने वाला व्यक्ति आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है। मुनिश्री ने कहा कि संतों के परिचय से समाधि मिलती है, गृहस्थों के परिचय से उपाधि बढ़ती है। संत किसी भी संप्रदाय के हों उन्हें आत्मीयता का भाव रखना चाहिए। जीवन विज्ञान आचार्य महाप्रज्ञ जी के उर्वरा मस्तिष्क की देन है। शिक्षा जगत के लिए एक नया आयाम है जीवन विज्ञान विज्ञान के प्रयोग से जीवन में आमूल चूल परिवर्तन आ सकता है।

मुनि आदर्शजी ने कहा कि आध्यात्मिक विकास जिनशासन का लक्ष्य है। छोटे-छोटे प्रत्याख्यान करने से जीवन में खुशहाली आती है। खुश रहने के लिए ज्ञान की आराधना करनी चाहिए। मुनिश्री ने मन, हृदय, आत्मा की विवेचना की।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि जिनेश कुमार जी के नवकार मंत्र से हुआ। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। साउथ कोलकाता अध्यक्ष विनोद कुमार चोरड़िया ने स्वागत भाषण किया। मुनि आदर्शजी का परिचय दर्शन भाई ने दिया। तेरापंथ सभा के मंत्री कमल सेठिया ने आभार ज्ञापन किया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

✦ *गार्हस्थ्य में रहते हुए भी व्यक्ति आंशिक रूप में संयम को स्वीकार कर सकता है। अणुव्रत मध्यम मार्ग है। अणुव्रत का अर्थ है–छोटे-छोटे संकल्प। इसे स्वीकार करके भी मोक्ष की ओर कुछ अंशों में आगे बढ़ा जा सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं - मनुष्यत्व, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।

आचार्य श्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

द पावर ऑफ सेल्फ पावर कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी के सान्निध्य में कंचन देवी ढेलड़िया की अध्यक्षता में 'द पावर ऑफ सेल्फ पावर' कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। महिला मंडल द्वारा सामूहिक 'प्रेरणा गीत' से मंगलाचरण किया गया।

सहमंत्री डिंपल सालेचा ने सभी कार्यशाला के संभागी का स्वागत करते हुए विषय की जानकारी दी। संरक्षिका फेना देवी भंसाली, मुख्य प्रशिक्षिका चंदा चोपड़ा, उपाध्यक्ष जयश्री सालेचा, लीलादेवी छाजेड़, पूर्व अध्यक्ष पुष्पा देवी बुरड़ सहित अनेक बहनों ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी शताब्दीप्रभा जी ने बताया कि हर जीव में आत्मशक्ति होती ही है। जरूरत है उसे पहचानने की। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे आसपास देखने को मिलते हैं, जिसमें जीव अपने आत्मशक्ति से ज्यादा काम करता है। पहले के जमाने में बहनें एक-एक बोल लेकर कई-कई थोकड़े मुख जबानी याद कर लेती थी। कई लोगों की तपस्या में अपनी आत्मशक्ति दिखती है। कार्यशाला में बहनों की उपस्थिति अच्छी रही। आभार ज्ञापन अध्यक्ष कंचन देवी ढेलड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन पूर्व मंत्री ममता मेहता ने किया।

'कन्याओं के विकास में माँ की भूमिका' कार्यशाला का आयोजन

गौरेगाँव

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के सान्निध्य में महिला मंडल की कार्यशाला आयोजित हुई। महिला मंडल संयोजिका प्रतिमा सांखला ने अपने क्षेत्र की सभी गतिविधियों और तपस्या को विस्तार से साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के श्रीचरणों में निवेदित किया। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने महती कृपा करके प्रेरणा पाथेय प्रदान किया।

ज्ञानशाला से बच्चों का विकास, कन्याओं के विकास में माँ की भूमिका आदि विषयों पर साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने प्रेरणादायक पाथेय प्रदान किया। मंडल की बहनों ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के समक्ष अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाकर अहोभाव ज्ञापित किया।

कार्यशाला को सफल बनाने में महिला मंडल संयोजिका प्रतिमा सांखला, सह-संयोजिका ममता चिप्पड़, कल्पना चोरड़िया, कोषाध्यक्ष पिंकी सांखला आदि एवं पूरे समाज से सभी बहनों का सहयोग प्राप्त हुआ।

ज्ञान चेतना प्रश्नोत्तरी का आयोजन

मदुरै।

स्थानीय तेरापंथ भवन में तेरापंथ कन्या मंडल, मदुरै के तत्त्वावधान में ज्ञान चेतना प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं मंगलाचरण से हुई। स्वाध्याय निर्जरा का बहुत ही अच्छा उपक्रम है। इससे हमारी ज्ञान चेतना जगृत होती है। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान कृषा लोढ़ा और द्वितीय स्थान में केटी चोपड़ा, कोमल जीरावला, रिद्धि पारख को दिया गया।

प्रतियोगिता का संयोजन कन्या मंडल प्रभारी दीपिका फूलफगर ने किया। धन्यवाद ज्ञापन संयोजिका मुस्कान सुराणा ने किया।

भिक्षु भक्ति संध्या का आयोजन

हनुमंतनगर।

कार्तिक सुदी तेरस को भिक्षु भक्ति संध्या का आयोजन महाश्रमण सुर संगम द्वारा त्यागराजनगर स्थित चैनरूप विजया दुगड़ के निवास स्थान पर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। महाश्रमण सुर संगम से प्रभारी सन्नी रांका, परामर्शक विक्रम पुगलिया, राहुल मेहता, सहमंत्री देवेंद्र आंचलिया, संगठन मंत्री दीक्षित सोलंकी और परिवार की ओर से विजया देवी दुगड़, कनक देवी बरड़िया ने अपनी प्रस्तुतियों से पूरे माहौल को भिक्षुमय बना दिया।

तेयुप एचबीएसटी मंत्री राजीव हिरावत ने परिषद के इस उपक्रम के बारे में जानकारी दी तथा बताया कि इसका लाभ परिषद परिवार के हर घर तक पहुँचाना है, परिवार से चैनरूप दुगड़ ने तेयुप व परिषद संचालित महाश्रमण सुर संगम टीम का धन्यवाद ज्ञापन किया।

विमल बरड़िया, निर्मल बछावत, चैनरूप बछावत, सूरज जैन, सुमेरमल डोशी एवं पारिवारिक जनों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन राजीव हीरावत ने किया।

तेयुप द्वारा सेवा कार्य

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेयुप एवं तेरापंथ किशोर मंडल ने साथ मिलकर सेवा कार्य हेतु एशियन सहयोगी संस्थान, केस्टोपुर के ३४ अनाथ बच्चों को सुबह का नाश्ता एवं स्कूल के जूतों का वितरण किया। संस्थान के संचालक ने कहा कि तेयुप एवं तेरापंथ किशोर मंडल, पूर्वांचल-कोलकाता समय-समय पर इन अनाथ बच्चों को सहयोग करती रहती है तथा तेयुप के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की। अमृतलाल सरला देवी गंग परिवार सेवा कार्य के प्रायोजक थे।

कार्यक्रम में अध्यक्ष संदीप सेठिया, उपाध्यक्ष-प्रथम धनपत बरड़िया, मंत्री सिद्धार्थ दुधेड़िया, सहमंत्री-प्रथम यशवर्धन श्यामसुखा आदि अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

बढ़ती रहे धर्म भावना

सिलीगुड़ी।

सिलीगुड़ीवासियों की ऐतिहासिक भेंट अर्पण करने पर मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि सिलीगुड़ी का चातुर्मास ऐतिहासिक रहा। श्रावक समाज ने गुरुदृष्टि की आराधना करते हुए चातुर्मासिक साधना, आराधना में जागरूक रहकर ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप के द्वारा कर्म निर्जरा की। इस बार श्रावक समाज ने विशेष रूप से तपस्या की है। चातुर्मास प्रारंभ से लेकर अब तक तपाराधना गतिमान है। गृहस्थ जीवन का पालन करते हुए सम्यक् रूप में धार्मिकता भी रहनी चाहिए।

हमारा व्यवहार, आचरण, संस्कार, परिवेश सभी में आध्यात्मिकता का समावेश हो जाए तो व्यक्ति का जीवन आदर्शमय बन जाता है। स्वाध्याय एवं तप अपने आपमें भीतर से जागृत कर देता है। आज व्यक्ति अशांति का जीवन जी रहा है। शांति, सुकून पदार्थ में नहीं संतोष एवं संयम में है। सिलीगुड़ी वासियों में धर्म की भावना बढ़ती रहे। तप के क्षेत्र के साथ-साथ ज्ञान का भी विकास होता रहे। आध्यात्मिक विकास के बिना भौतिक विकास से साधन मिल सकते हैं, लेकिन सुख और शांति साधना से ही मिलती है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि जैन साधु-साध्वी आत्मकल्याण के साथ-साथ परकल्याण का मनोभाव रखते हुए विचरण करते हैं। एक स्थान पर चातुर्मास कर जनमानस को आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणा प्रदान करते हैं। चातुर्मास का समय विशेष धर्मोपासना का होता है। अहिंसा, संयम, त्याग-प्रत्याख्यान के द्वारा कर्म निर्जरा की जाती है। त्याग-संयम के प्रति चेतना जागृत रहे। गुरु इंगित की आराधना करते हुए धर्मसंघ की प्रभावना में सिलीगुड़ी श्रावक समाज सदैव आगे रहे। मेरे संयमजीवन का यह पहला अवसर है जब चातुर्मास विदाई में १०८ तेलों की भेंट श्रावक समाज ने अर्पित की।

सभा मंत्री मदन संचेती ने बताया कि सिलीगुड़ी के इतिहास में पहली बार एवं तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में संभवतः पहली बार चातुर्मासिक विदाई में १०८ तेलों की भेंट मिली है। श्रावक समाज में तप के प्रति विशेष भावना बनी है। सिलीगुड़ी तेरापंथ सभा सभी तपस्वियों का अभिनंदन करती है।

चित्त समाधि शिविर का आयोजन

साउथ कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेममं के तत्त्वावधान में चित्त समाधि शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में अभातेममं की पूर्व अध्यक्षा डॉ० सूरज बरड़िया थी। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जीवन में समाधि का महत्त्व है। समाधि के बिना समाधान नहीं मिलता है। चित्त समाधि के लिए विनय, श्रुत, तप, आचार की आराधना करनी चाहिए। मन में जितनी आकांक्षा कम होगी उतनी ही समाधि मिलेगी। व्यक्ति पदार्थ के प्रति जितना आसक्ति रखता है उतना ही दुखी होता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि आधि, व्याधि, उपाधि से जो मुक्त होता है वह समाधि को प्राप्त होता है। बदलते परिवेश में व्यक्ति का चित्त अशांत रहता है। अशांत मन के कारण तनाव पैदा होता है। तनाव के कारण बीमारियाँ पैदा होती हैं। मुनिश्री ने कहा कि रहना, सहना, कहना आ जाए तो व्यक्ति सुखी हो सकता है। मुनि परमानंदजी, डॉ० सूरज बरड़िया ने विचार रखे। कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं की बहनों के मंगल संगान से हुआ। स्वागत भाषण तेममं की अध्यक्षा पदमा कोचर, आभार मंत्री अनुपमा नाहटा व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। शिविर में अच्छी संख्या में महिलाएँ उपस्थित थीं।

नशामुक्ति अभियान का आयोजन

औरंगाबाद।

मुनि अर्हत कुमार जी ने नशा मुक्ति अभियान के तहत जड़गांववाला ज्वेलर्स के प्रांगण में कहा कि नशा जीवन की दिशा व दशा को पतन का मार्ग दिखाता है। व्यक्ति अपनी आत्मशक्ति को जागृत कर इस ज्वालामुखी से स्वयं को बचाने का प्रयास करे। सहवर्ती संत मुनि भरत कुमार जी एवं मुनि जयदीप कुमार जी भी उपस्थित रहे।

अणुव्रत समिति, औरंगाबाद के मंत्री सुनीता सेठिया ने कहा कि जो व्यक्ति नशा करता है वह अपने आपको मौत के मुँह में ढकेलता है। परिवार की तिरस्कारिता भी सहन करता है। मुनिश्री की प्रेरणा से अनेक युवकों ने नशामुक्ति का संकल्प लिया।

आचार्यश्री तुलसी का ११०वाँ जन्म दिवस समारोह का आयोजन

शाहदरा, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में ओसवाल भवन में आचार्यश्री तुलसी का ११०वाँ जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आज से ११० वर्ष पूर्व एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ, जिसने तेरापंथ के आचार्य एवं कुशल प्रशासक के रूप में ख्याति पाई। जिनके शासनकाल में नई क्रांति घटित हुई। विकास के नए आयाम उद्घाटित हुए, नए मूल्यमानक स्थापित हुए, नए युग का प्रवर्तन हुआ। उनका जन्म इस धरती पर मानवता के मसीहा के अवतरण के रूप में हुआ। ऐसे महापुरुष को पाकर यह धरती धन्य हो गई। आचार्य तुलसी ने न केवल तेरापंथ बल्कि जिनशासन को गौरवान्वित किया। समण श्रेणी के रूप में नए तीर्थ का प्रवर्तन किया।

साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। साध्वी समत्वयशा जी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि पौरुष व पराक्रम के पर्याय का नाम है–आचार्यश्री तुलसी। नवीनता व प्राचीनता के संगम का नाम है–आचार्यश्री तुलसी। २०वीं सदी के शिखर पुरुष का नाम है–आचार्यश्री तुलसी। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी पावरफुल थे, पीसफुल थे एवं पोजिटिव थे। इसलिए उन्होंने स्वयं का एवं संघ का विकास किया।

अणुवविभा के चीफ ट्रस्टी तेजकरण सुराणा, सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, सभा के निवर्तमान अध्यक्ष व ओसवाल समाज के महामंत्री राजेंद्र सिंघी, अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली के संगठन मंत्री राजीव महनोत, अणुव्रत समिति, गाजियाबाद के अध्यक्ष कुसुम सुराणा, दिल्ली ज्ञानशाला संयोजक अशोक बैद, पूर्वी दिल्ली महिला मंडल से प्रमिला डागा, टीपीएफ से हरीश आंचलिया, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, शुभकरण कोठारी, सरला बैद ने अपने भावों से गुरुदेव की अभ्यर्थना की। मधुर संगायक संजय भटेवरा ने सरस एवं भावपूर्ण गीत का संगान करके पूरी परिषद को तुलसीमय बना दिया। सभा के मंत्री सुरेश सेठिया ने आभार ज्ञापन किया।

क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर।

मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप के निर्देशन में आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षा कल्याणक महोत्सव वर्ष पर तेरापंथ किशोर मंडल ने क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी तेरापंथ के ११वें अधिशास्ता हैं। उनका जीवन प्रेरणादायी है, उनके जीवन प्रसंगों पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के आयोजन में हमें आचार्यश्री के जीवन को जानने और समझने का मौका मिला है। इसी भावना से तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा आयोजित इस क्विज में श्रावक-श्राविका समाज ने प्रतिभागी बनकर अपने ज्ञान में अभिवृद्धि की है। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त टीमों को प्रायोजक मनोहरलाल बाबेल परिवार द्वारा पारितोषिक दिया गया।

तेयुप अध्यक्ष राकेश पोखरणा, अभातेयुप साथी एवं तेयुप उपाध्यक्ष विकास बांठिया, संगठन मंत्री पवन बैद, पूर्व तेयुप अध्यक्ष राकेश दुधोड़िया, संपत चावत, सभा महिला मंडल के पदाधिकारी, परिषद के साथ मौजूद रहे। प्रतियोगिता में संयोजक नमन चावत, सह-संयोजक दर्शन बाबेल एवं टीकेएम टीम से रौनक बोथरा का विशेष श्रम रहा।

तेरापंथ किशोर मंडल संयोजक नमन चावत ने सभी का स्वागत किया व अंत में आभार ज्ञापन संयोजक विशाल सामसुखा ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप पूर्व अध्यक्ष अभिषेक कावड़िया एवं उपाध्यक्ष विकास बांठिया ने किया।

✦ *व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

पूर्वांचल-कोलकाता।

नागौर निवासी, पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी विक्रम चोरड़िया का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक सुरेंद्र सेठिया एवं सह-संस्कारक पुष्पराज सुराणा ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा संपादित करवाया।

संस्कारकों ने मंगलभावना पत्रक प्रदान किया। साथ ही आभार ज्ञापित किया।

* * *

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी सुरेंद्र, नरेंद्र, महेंद्र चोपड़ा के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक विनीत बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया। इस कार्यक्रम में तेयुप सहमंत्री मांगीलाल बोथरा सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

इस अवसर पर जसकरण बोथरा, साधुमार्गी संघ गंगाशहर भीनासर महिला मंडल की अध्यक्षा प्रमिला जैन, सुनील सुराणा और समाज व परिवार के सदस्यों की उपस्थिति रही।

* * *

सूरत।

रासीसर निवासी, सूरत प्रवासी हेमंत-श्वेता छाजेड़ का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक धर्मचंद सामसुखा, पवन कुमार बुच्चा ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया।

* * *

नामकरण संस्कार

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी रोहित-समता बैद के नवजात पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन छाजेड़, पीयूष लुणिया, विनीत बोथरा, देवेंद्र डागा और विपिन बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया। सहयोगी के रूप में तेयुप सहमंत्री ऋषभ लालाणी, धनपत भंसाली और विनोद जैन उपस्थित रहे।

जैन संस्कारक विपिन बोथरा ने नामकरण पत्रक का वाचन किया। इस अवसर पर पारिवारिकजनों की उपस्थिति रही।

* * *

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी प्रशांत-निधि मरोठी के नवजात पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया, विपिन बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

जैन संस्कारक विपिन बोथरा ने नामकरण पत्रक का वाचन किया। इस अवसर पर पारिवारिकजनों की उपस्थिति रही।

* * *

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

पूर्वांचल-कोलकाता।

चूरू निवासी, साउथ कोलकाता प्रवासी चंपालाल बैद के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपादित करवाया।

संस्कारक अनूप गंग ने मंगलभावना पत्रक प्रदान किया। साथ ही बैद परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया।

* * *

पूर्वांचल-कोलकाता।

टमकोर निवासी, पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी गौरव-श्वेता बांठिया के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक अनूप गंग ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक कार्यक्रम संपन्न करवाया।

तेयुप की ओर से मंत्री सिद्धार्थ दुधेड़िया ने मंगलभावना पत्रक प्रदान किया। साथ ही बांठिया परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया।

* * *

सूरत।

बावलास (भीलवाड़ा) निवासी, सूरत प्रवासी कमलेश आंचलिया के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक धर्मचंद सामसुखा, विनीत सामसुखा ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

संयम आंचलिया ने संस्कारकों एवं पधारे हुए सभी परिजनों का आभार ज्ञापित किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया।

✦ वित्तीय उत्थान के साथ-साथ वृत्त की शुचिता को वृद्धिंगत करने का भी प्रयास किया जाए तो स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में प्रस्थान हो सकता है।
आचार्य श्री महाश्रमण

उपासना

(भाग - एक)

❑ प्रस्तुति ❑

मैत्री

मैत्री का विराट् दर्शन

कहा जाता है–'वसुधैव कुटुम्बकम्' वसुधा एक कुटुम्ब है, परिवार है। यह प्रत्यक्ष दर्शन की बात है। किंतु अतीत में जाएँ तो इसका अर्थ होगा–इस जगत् में जो प्राणी है, वह कभी न कभी तुम्हारे कुटुम्ब या परिवार का सदस्य रहा है। इसी तथ्य को उपाध्याय विनयविजयजी ने इस भाषा में प्रस्तुत किया–

सर्वे पितृभ्रातृपितृव्यमातृपुत्राङ्गजास्त्रीभगिनीस्तुषात्वम्।
जीवाः प्रपन्नाः बहुशस्तदेतत् कुटुम्बमेवेति परो न पश्चित्।।

सभी प्राणी अनेक बार तुम्हारे पिता, भ्राता, चाचा, माता, पुत्र, पत्नी, बहन और पुत्रवधू बन चुके हैं इसलिए यह जगत् तुम्हारा ही कुटुम्ब है, पराया या दूसरा नहीं है।

यह मैत्री का विराट् दर्शन है। हम वर्तमान संबंधों को बहुत सीमित बना लेते हैं। व्यक्ति मानता है–मेरे परिवार के दस, बीस अथवा पचास लोग हैं। वह उनके प्रति न्याय करता है और दूसरों के प्रति अन्याय करता है। पारिवारिक संबंधों के कारण वह अनेक अकृत्य कार्य कर डालता है। यदि वह कुछ गहरे में उतरकर देखे, तो मैत्री का यह विराट् दर्शन प्रस्तुत होता है–चारों तरफ तुम्हारे सगे-संबंधी हैं, निजी लोग हैं, कोई पराया नहीं है। तुम किसके साथ अन्याय और अत्याचार करते हो? तुम किसके साथ वैर-विरोध और शत्रुता का भाव रखते हो? शत्रुता के लिए कोई अवकाश ही नहीं बचता।

पवित्र भूमिखंड

महाभारत का प्रसंग है। मृत्युशय्या पर पड़े भीष्म ने कहा–देखो! मेरी दाहक्रिया उस पवित्र भूमिखंड पर करना, जहाँ आज तक किसी को जलाया नहीं गया हो। कहा जाता है–उसी समय एक देववाणी हुई, आकाश से ध्वनि प्रकट हुई–'आप कौन से स्थान की बात कर रहे हैं? जहाँ आप उपस्थित हैं, मृत्युशय्या पर लेटे हैं, वहाँ सौ भीष्मों को जलाया जा चुका है। इसी स्थान पर तीन सौ पांडवों को तथा हजारो द्रोणाचार्यों को जलाया जा चुका है। कर्णों की तो कोई गिनती ही नहीं है। न जाने कितने कर्ण इस भूमिखंड पर जलाए गए हैं। भूमि का कोई खंड ऐसा नहीं मिलेगा, जहाँ यह सारा न हुआ हो। आप किस पवित्र स्थान की बात कर रहे हैं?'

अत्र भीष्मशतं दग्धं, पाण्डवानां शतत्रयम्।
द्रोणाचार्यसहस्रं तु कर्णसंख्या न विद्यते।।

इतना विराट् है हमारा जगत् और उसमें कितना चिरकालीन है जीव का परिभ्रमण, संबंध का ताना-बाना।

मैत्री का आधार

जैन साहित्य में कहा गया–ऐसा कोई स्थान नहीं है, ऐसी कोई जाति नहीं है, ऐसा कोई कुल नहीं है, ऐसी कोई योनि नहीं है जहाँ कोई जीव अनेक बार या अनंत बार पैदा न हुआ हो।

न सा जाई न सा जोणी, न तं ठाणं न तं कुलं।
न जाया न माया, जत्थ सव्वे जीवा अणंतसो।।

जीव के परिभ्रमण, संसार-चक्र, जन्म-मरण के संबंधों पर टिका है मैत्री का दर्शन। यह ऐसा दर्शन है, जहाँ शत्रुता के लिए कोई अवकाश और स्थान नहीं है। यह मैत्री का महत्त्वपूर्ण आधार है।

विधायक भाव है मैत्री

मैत्री एक विधायक भाव है। क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, भय, द्वेष, चुगली, दोषारोपण, ये सारे निषेधात्मक भाव है। निषेधात्मक भाव के द्वारा आत्मा का पतन होगा और व्यक्तित्व का संकुचन हो जाएगा। संकोच और विकोच–ये दो अवस्थाएँ हैं। निषेधात्मक भाव से ग्रस्त व्यक्ति का व्यक्तित्व सिकुड़ जाता है, वह कभी बड़ा नहीं बनता। जिस व्यक्ति ने विधायक भावों का सृजन कर लिया, उसका व्यक्तित्व गुलाब के फूल की भाँति विकस्वर हो जाता है। जैसे ही मैत्री का भाव प्रस्फुटित होता है, व्यक्ति आनंद में निमज्जन करने लग जाता है। जैसे ही मैत्री का संवेग प्रबल होता है, ग्रंथियों का स्राव शुरू हो जाता है। यह माना जाता है–विशेष प्रकार के भाव जब जागृत होते हैं, ग्रंथियों का स्राव शुरू हो जाता है। जब विधायक भावों का संवेग होता है, तब लाभदायी, कल्याणकारी परिवर्तन लाने वाला स्राव शुरू हो जाता है। जब निषेधात्मक भावों का संवेग होता है, तब अहितकर स्राव शुरू हो जाता है। मैत्री का पुष्ट आधार है विधायक भाव से होने वाले परिणाम।

मैत्री की प्रक्रिया

मैत्री की प्रक्रिया को समझना भी आवश्यक है। जब तक हम मैत्री की प्रक्रिया को नहीं जान लेते, मैत्री के भाव का विकास नहीं किया जा सकता। उत्तराध्ययन सूत्र में मैत्री की बहुत सुंदर प्रक्रिया बतलाई गई है। मेत्तिं भूएसु कप्पए–सबके साथ मैत्री करो, यह प्रतिपादन मात्र नहीं किया, किंतु मैत्री की समग्र प्रक्रिया का निर्देश किया है। मैत्री की प्रक्रिया के तीन अंग हैं–क्षमापना, प्रह्लादभाव और मैत्री। मैत्री का परिणाम है भाव-विशुद्धि और निर्भयता। इसमें मैत्री का पूरा परिवार है। जब जीव सहन करता है, तब प्रह्लादभाव को पैदा करता है। क्षमा नहीं है, सहिष्णुता नहीं है, तो मैत्रीभाव का विकास नहीं किया जा सकता। मैत्रीभाव का विकास करने के लिए सहिष्णु होना अत्यंत अनिवार्य है। जो सहिष्णु है, वह मैत्री का अनुशीलन कर सकता है। मैत्री बाद में है, पहले है क्षमा का अभ्यास। जो सहन करना नहीं जानता, मैत्री हो नहीं सकती। चाहे भाई-भाई का संबंध हो, मैत्री रह नहीं सकती। सबसे पहले सहन करने की शक्ति का विकास करना आवश्यक है।

मैत्री और प्रमोद

सहिष्णुता की शक्ति का परिणाम है–प्रह्लादभाव। प्रमोदभाव के बिना मैत्री फलित नहीं होती। यद्यपि प्राचीन आचार्यों ने, महर्षि पतंजलि ने, बौद्ध साहित्य और जैन साहित्य ने भी मैत्री और प्रमोद–इन दो भावनाओं का पृथक्करण किया है। उन्हें अलग-अलग माना है, किंतु वास्तव में प्रमोद मैत्री से पृथक् नहीं है, वह मैत्री का जनक है। सहिष्णुता पैदा होगी तो प्रमोद भावना पैदा होगी, दूसरों की विशेषताओं, अच्छाइयों के प्रति मन में प्रमोद भावना उभरेगी, एक सुखानुभूति और आह्लाद का भाव प्रकटेगा। प्रह्लादभाव की अवस्था में ही मैत्री का भाव विकसित होगा, सब प्राणियों के प्रति मैत्री जागेगी।

मैत्री वह है

यदि हम सीधे मैत्री करना चाहें तो कुछ भी हाथ में नहीं आएगा। क्षमा और प्रमोदभाव–इन दो गुणों का विकास होगा, तब सबके प्रति मैत्री होगी। कितना सुंदर कहा गया है–मैत्री मनुष्य के साथ, मैत्री अपने पास रहने वाले के साथ, मैत्री सब जीवों के साथ। मैत्री किसी एक के साथ नहीं होती। यदि प्राणीमात्र के प्रति आपमें मैत्री का विकास हुआ है तो वह मैत्री है। यदि किसी एक के प्रति हुआ है तो वह और कुछ है। मैत्री एक के साथ नहीं हो सकती। वह होती है तो सबके साथ होती है, अन्यथा मैत्री होती ही नहीं है।

मैत्री का परिणाम है–भाव विशुद्धि। जिसमें मैत्रीभाव का विकास होगा, उसमें विधायक भाव का विकास होगा। जहाँ भाव विशुद्धि है, वहाँ अभय है। जहाँ भाव अशुद्धि है, वहाँ भय बना रहता है। आज भय की समस्या बहुत विकट है। व्यक्ति चोर और डाकू से डरता है, उग्रवाद से डरता है और वह कभी-कभी पत्नी से भी डरने लग जाता है।

भय का निदर्शन

एक आदमी हमेशा ऑफिस से आते ही जेब से रुपये निकाल कर अलमारी में रखता है और बाहर ताला लगा देता है। उसे सदा भय रहता है कि पत्नी कोट से रुपया निकाल न ले। एक दिन वह जल्दी में था। कोट से रुपया निकालना भूल गया। दूसरे दिन कोट पहना। उसने देखा–रुपये सुरक्षित हैं। पत्नी से पूछा–क्या आज कोट की सफाई नहीं की?

'मैंने की तो थी।'

'ऐसा लगता है–सफाई नहीं की है।'

'नहीं, मैंने कोट की सफाई की है।'

'यह कैसे हो सकता है कि कोट की सफाई हो और जेब की सफाई न हो? इसमें रुपये वैसे के वैसे पड़े हैं, इसलिए लगता है कि सफाई नहीं हुई होगी।'

यह भय की समस्या का निदर्शन है। व्यक्ति दूसरों से ही नहीं डरता, अपने आप से ही बहुत डरता है। आज के मनोवैज्ञानिकों ने भय के नब्बे प्रकार बतलाए हैं। व्यक्ति कुत्ते से डरता है, बिल्ली से डरता है, अनेक प्रकार के प्राणियों से डरता है। जब मैत्री घटित हो जाती है, भाव विशुद्धि होती है, व्यक्ति अभय और निर्भय बन जाता है।

अहिंसा और मैत्री

अहिंसा का विराट् रूप मैत्री के दर्शन में प्रकट हुआ है। अहिंसा एक नकारात्मक शब्द है–किसी को मत मारो। अनेक लोगों ने कहा–हमें नकारात्मक नहीं, सकारात्मक चाहिए, विधायक चाहिए। मैत्री अहिंसा का सकारात्मक रूप है। चाहे अहिंसा कहें या मैत्री–दोनों एक ही बात है। यह मैत्री का विशाल दर्शन किसी कटघरे में बंधा हुआ नहीं है। नकारात्मक रूप है अहिंसा और सकारात्मक रूप है मैत्री। यदि जागरूकता नहीं है, प्रतिक्रिया-विरति नहीं है तो मैत्री की दिशा में चरण आगे नहीं बढ़ेंगे। यदि संवेगात्मक प्रतिक्रियाएँ होती रहती हैं, माया, कपटपूर्ण व्यवहार चलता है तो मैत्री की संभावना नहीं की जा सकती। व्यवहार में यह देखा जाता है कि माया का आचरण भी बहुत प्रतिष्ठित हो गया है। व्यक्ति बहुत छलना करता है। छलना की प्रवृत्ति ऐसी बन गई है कि आदमी किसी का विश्वास नहीं करता। मैत्री परम विश्वास का स्रोत है। मैत्री होगी तो उसके पीछे कोई प्रतिक्रियात्मक वृत्ति नहीं होगी। जहाँ प्रतिक्रियात्मक वृत्तियाँ नीचे रह जाती हैं, वहाँ मैत्री घटित होती है। माया विश्वास की जड़ को उखाड़ देती है।

जहाँ ये संवेगात्मक प्रतिक्रियाएँ होती हैं, संबंध और रिश्ते टूटते रहते हैं, विश्वास भी समाप्त हो जाता है। इस स्थिति में आध्यात्मिक मैत्री का विकास कैसे हो सकता है? व्यावहारिक मैत्री कामचलाऊ बात है। आध्यात्मिक मैत्री से उसकी तुलना नहीं की जा सकती।

कहा गया–तू सत्य की खोज कर, तुम्हें पता चलेगा–इस विराट् संसार में मैं अकेला नहीं हूँ। मैंने जो संबंध बनाए हैं, उन संबंधों की दुनिया इतनी छोटी नहीं है, वह बहुत बड़ी है। क्या यह संभव है–दो दिन का संबंध संबंध बन जाए, हजारों-हजारों वर्षों का संबंध संबंध न रहे। संबंधों का एक पूरा चक्र है, शृंखला है। इस सच्चाई को समझकर इस सूत्र का उच्चारण करो–'मेत्तिं भूएसु कप्पए।' यदि हम इस समग्र बात को छोड़ देते हैं, केवल एक तत्त्व को पकड़ लेते हैं तो मैत्री का दर्शन समझ में नहीं आएगा। **(क्रमशः)**

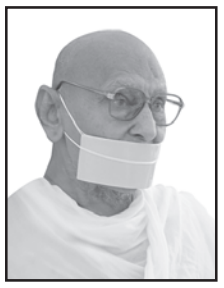

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

ज्ञेय-हेय-उपादेय

भगवान् प्राह

(६०) मनःप्रवर्तकं चित्तं, वाणीदेहनियामकम्।
प्रशस्तेऽध्यवसाये तु, प्रशस्ताः स्युरिमे समे।।

चित्त मन का प्रवर्तक है। वह वाणी और शरीर का नियामक है। अध्यवसाय के प्रशस्त होने पर ये सब प्रशस्त हो जाते हैं।

(६१) मनःशुद्धौ भावशुद्धिः, लेश्याशुद्धिस्ततो भवेत्।
अध्यवसायशुद्धिश्च, साधनायाः अयं क्रमः।।

मन की शुद्धि होने पर भाव की शुद्धि होती है। भाव की शुद्धि होने पर लेश्या की शुद्धि होती है और लेश्या की शुद्धि होने पर अध्यवसाय की शुद्धि होती है। यह साधना का क्रम है।

साधना मार्ग में कायसिद्धि और मनःसिद्धि दोनों अपेक्षित है। कायसिद्धि का अर्थ है–शरीर की पूर्णरूपेण स्वस्थता, वात, पित्त आदि दोषों का संतुलन, शरीर का समग्र कार्य कलाप सुचारु रूप से संचालित होना, इसी प्रकार मनःसिद्धि का अर्थ है–मन की निर्मलता, एकाग्रता, शांतता, स्थिरता, वासना-विकार, ईर्ष्या, क्रोध, अहंकार आदि दोषों से मुक्तता है। पंच प्राणों पर नियंत्रण से काय-सिद्धि होती है और श्वास को सम्यक् साध लेने पर मन की सिद्धि प्राप्त होती है।

शरीर पंचभूतात्मक है, पंच तत्त्वों से निर्मित हैं–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। वायु तत्त्व ही प्राण है। प्राण के द्वारा ही समस्त शरीर और मन, बुद्धि, इंद्रियाँ आदि सक्रिय रहते हैं। प्राण, अपान आदि पाँच मुख्य प्राण तथा पाँच उपप्राण वायु के ही अलग-अलग स्थानों से अलग-अलग नाम हैं। प्राणों के अशुद्धि से शरीर अस्वस्थ होता है, आलस्य, प्रमाद आदि दोषों से युक्त होता है। इससे प्राणमय कोश और अन्नमयकोश भी विकृत होता है। पाँच प्राणों के स्थान और कार्य को हम अपने ध्यान में लेकर फिर इन्हें सुव्यवस्थित रखने का प्रयत्न करें तो कायसिद्धि सहज प्राप्त हो सकती है।

पंच प्राणों की अवस्थिति तथा कार्य

(१) प्राण–शरीर में कंठ से लेकर हृदय पर्यन्त जो वायु कार्य करता है, उसे 'प्राण' कहा जाता है।

कार्य–यह प्राण नासिका मार्ग, कंठ, स्वर-तंत्र, वाक्-इंद्रिय, अन्ननलिका, श्वासन तंत्र, फेफड़ों एवं हृदय को क्रियाशीलता तथा शक्ति प्रदान करता है।

(२) अपान–नाभि के नीचे से लेकर पैर के अंगुष्ठ पर्यन्त जो प्राण कार्यशील रहता है, उसे 'अपान' प्राण कहते हैं।

कार्य–शरीर में संगृहीत हुए समस्त प्रकार के विजातीय तत्त्वों अर्थात् मल व मूत्र आदि को बाहर कर देह-शुद्धि का कार्य 'अपान प्राण' करता है।

(३) उदान–कंठ के ऊपर से लेकर सिर पर्यन्त देह में अवस्थित प्राण को 'उदान' कहते हैं।

कार्य–कंठ से ऊपर शरीर के समस्त अंगों–नेत्र, श्रोत, नासिका व संपूर्ण मुख मंडल को ऊर्जा व आभा प्रदान करता है। पिच्युटरी व पिनियल ग्रंथि सहित पूरे मस्तिष्क को 'उदान' प्राण क्रियाशीलता प्रदान करता है।

(४) समान–हृदय के नीचे से लेकर नाभि पर्यन्त शरीर में क्रियाशील प्राण को 'समान' कहते हैं।

कार्य–यकृत, आन्त्र, प्लीहा व अग्न्याशय (Pancreas) सहित संपूर्ण पाचन-तंत्र की आंतरिक कार्य प्रणाली को नियंत्रित करता है।

(५) व्यान–यह जीवनी प्राण-शक्ति पूरे शरीर में व्याप्त है। यह शरीर की समस्त गतिविधियों को नियमित तथा नियंत्रित करता है। सभी अंगों, मांस-प्रेशियों, तंतुओं, संधियों एवं नाड़ियों को क्रियाशीलता व ऊर्जा शक्ति 'व्यानप्राण' ही करता है।

इन पाँच प्राणों के अतिरिक्त शरीर में 'देवदत्त', 'नाग', 'कृकल', 'कूर्म' व 'धनजय' नामक पाँच उपप्राण हैं जो क्रमशः छींकना, पलक झपकना, जंभाई लेना, खुजलाना तथा हिचकी लेना आदि क्रियाओं को संचालित करते हैं।

वायु-प्राण और मन का संघर्ष चलता रहता है। अनेक लोग इसे नहीं जानते हैं और यह भी नहीं जानते कि इस संघर्ष में विजय कैसे प्राप्त की जा सकती है। अन्य युद्धों से यह युद्ध अति विकट है। इसमें दूसरा कोई नहीं होता। स्वयं को स्वयं की वृत्तियों के साथ युद्ध करना होता है और उस पर विजय प्राप्त करनी होती है। प्राण में जब मन लय होता है तब तमोगुण की वृत्तियाँ जोर पकड़ लेती हैं। व्यक्ति उनके अधीन हो जाता है। मन में यदि प्राण का लय होता है तब सतोगुण की वृद्धि होती है। संकल्प विकल्पों की अवस्था में मन प्राण के द्वारा कार्य करने लगता है। उस अवस्था में प्राण की गति सामान्य रहती है। किंतु संकल्प-विकल्प होने लगते हैं। तमोगुण की स्थिति में श्वास की गति तेज हो जाती है। मन और प्राण का परस्पर घनिष्ट संबंध है। कहा है–**'चले प्राणे चलं चित्तं'** प्राण के चंचल होने पर चित्त चंचल हो जाता है और प्राण के स्थिर होने पर मन स्थित हो जाता है।

श्वास का संयम व श्वासप्रेक्षा के प्रयोग में कुशलता हासिल कर लेने पर मन की सिद्धि व कायसिद्धि दोनों सहज प्राप्त की जा सकती है। स्थूल शरीर, सूक्ष्म-शरीर तथा मन इनके नियमन में प्राणायाम व प्राण की स्थिरता महत्त्वपूर्ण है। श्वास स्थिर व शांत होगा उतना ही अधिक व्यक्ति स्वस्थ तथा शांति का अनुभव करेगा। श्वास की संख्या भी औसत से कम होने लगेगी। श्वास दीर्घ होगा तो आयुष्य भी दीर्घ होगा। आयुष्य भी साँसों के साथ बंधा हुआ है। प्राणों पर विजय प्राप्त करने के लिए प्राणायाम का प्रयोग तथा श्वास के साथ मन को संयुक्त कर उसी पर एकाग्र रहने का अभ्यास किया जाए तो सहज में ही व्यक्ति आत्म-विजेता बन सकता है।

(६२) प्राणे संसाधिते सम्यक्, कायसिद्धिर्भवेत् ध्रुवम्।
श्वासे संसाधिते सम्यक्, मनःसिद्धिर्भवेत् ध्रुवम्।।

प्राण, अपान आदि पंचविध प्राणशक्ति की सम्यक् साधना कर लेने पर निश्चित रूप से कायसिद्धि हो जाती है। श्वास की सम्यक् साधना कर लेने पर निश्चित रूप से मन की सिद्धि हो जाती है।

(६३) पदे पदे निधानानि, योजने रसकूपिका।
भाग्यहीना न पश्यन्ति, बहुरत्ना वसुन्धरा।।

प्रत्येक पद पर निधान है, प्रत्येक योजन पर रसकूपिका है। भाग्यहीन व्यक्ति उन्हें देख नहीं पाते। यह वसुंधरा बहुत रत्न वाली है।

(६४) पदे पदे सदानंदः, शक्तिस्रोतः पदे पदे।
ध्यानहीना न पश्यन्ति, बहुरत्नं शरीरकम्।।

प्रत्येक पद पर आनंद है और प्रत्येक पद पर शक्ति का स्रोत है। ध्यानहीन उन्हें देख नहीं पाते। यह शरीर बहुत रत्न वाला है।

वसुंधरा–वसु का अर्थ है–रत्न, हीरे आदि। पृथ्वी इन्हें धारण करती है, अतः इसे वसुंधरा कहते हैं। इसमें अगणित धनराशि है। लेकिन प्राप्त उसे ही होती है, जो पुण्यशाली है, भाग्यवान है, भाग्य हीन को नहीं। भाग्य की अनुकूलता हो तो व्यक्ति के लिए वह सुलभ है। वह कहाँ से कहाँ छलाँग लगा लेता है और भाग्य प्रतिकूल हो तो जो है उससे भी हाथ धो बैठता है। ठीक इसी प्रकार मानव शरीर बहुत रत्नों का खजाना है। उससे जैसे बाह्य सामग्री प्राप्त होती है वैसे ही अंतः समृद्धि। दोनों का माध्यम शरीर है। **'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'**–धर्म-साधना का प्रथम साधन देह है। इसी शरीर से साधक भगवान् बनता है। शरीर में जो शक्ति है वह आत्म-चेतना की है। अनंत आनंद, अनंत ज्ञान, अनंत बल का दर्शन इसी में होता है। इनके अतिरिक्त गौण शक्तियाँ भी कम नहीं हैं। जितनी भी विस्मयकारक चेष्टाएँ, दृश्य, चमत्कार, विशिष्ट शक्तियाँ परिलक्षित होती हैं, उन सबका आधार शरीर ही है। इन सबकी अभिव्यक्ति का साधन है–ध्यान।

चित्त जैसे-जैसे सघन होता जाता है, वैसे-वैसे दिव्यताएँ प्रकट होती जाती हैं। ध्यान भाग्य है। भाग्यवान को विशेष वस्तुएँ, विशिष्टताएँ प्राप्त होती हैं वैसे ध्यानवान व्यक्ति को ही आत्मास्थितअनंत क्षमताएँ उपलब्ध होती हैं। देव और देवियाँ सेवा में उपस्थित रहकर अपने को धन्य मानती हैं। अष्टसिद्धि और नवनिधि भी उनके चरण चूमती है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस इनसे संपन्न थे। आचार्य शांतिसागर के पास जया, विजया, अपराजिता, लक्ष्मी–चार देवियाँ हाजिर रहती थीं। पद्मावती और सरस्वती भी उनकी सन्निधि का लाभ लेती थी। भक्त नरसिंह के 'मायरे' की बात प्रसिद्ध है। भक्त रैदान ने कठौती में गंगा को प्रकट कर दिया था। तब से यह कहावत भी चल पड़ी की 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'।

भगवान् महावीर, गौतम गणधर, महात्मा बुद्ध, कबीर, नानक, दादू, मीरा, सीता, सुभद्रा, आचार्य भिक्षु आदि असंख्य विभूतियों के बिखरे बीजों को संगृहीत किया जाए तो ग्रंथों के ग्रंथ भरे जा सकते हैं। यह सब ध्यान, भक्ति, जप की शक्तियों का ही प्रभाव है।

(क्रमशः)

✦ धर्म का ही एक महत्त्वपूर्ण अंग है सच्चाई। नैतिकता सच्चाई से जुड़ा हुआ तत्त्व है।

आचार्य श्री महाश्रमण

मंगलभावना समारोह के विविध आयोजन

बोरावड़

तेरापंथी सभा, बोरावड़ द्वारा तेरापंथ भवन में साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मंडल द्वारा किया गया। तत्पश्चात सभी श्रावक-श्राविका समाज ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। लक्ष्मी गेलड़ा, कन्या मंडल, अमित लोढ़ा ने गीत व कविता के माध्यम से साध्वीश्री जी के प्रति हृदयोद्गार व्यक्त किए। तेममं की बहनों ने रोचक प्रस्तुति से साध्वीवृंद की विशेषताओं का उल्लेख किया। महिला मंडल ने सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के बच्चों ने कव्वाली और कविता की प्रस्तुति दी।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष रिखब भंडारी, महिला मंडल अध्यक्षा हर्षा चोरड़िया, तेयुप अध्यक्ष विकास चोरड़िया, प्रियल कोटेचा, मुस्कान लुणिया, महावीर ढेलड़िया, नेमीचंद गेलड़ा आदि ने वक्तव्य के माध्यम से साध्वीश्री जी के आगामी विहार के प्रति मंगलकामनाएँ प्रेषित की। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि आज के पाँच माह और कुछ दिन पूर्व परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के आदेशानुसार चातुर्मास के लिए बोरावड़ के इस भवन में प्रवेश किया और बोरावड़वासियों ने स्वागत किया। पूरे चातुर्मास के दौरान श्रावक समाज बड़ा ही विनीत और समर्पित रहा। सभा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला सभी की सक्रियता बनी रही। परमपूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद और कृपा से बोरावड़ में हम कुछ कार्य कर सके। कार्यक्रम का संचालन मुस्कान लुणिया ने किया।

पर्वत पाटिया

मंगलभावना कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी हिमश्री जी के द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। मंगलाचरण मुस्कान बैद द्वारा किया गया। कार्यक्रम में सभा उपाध्यक्ष संजय बोहरा, महिला मंडल अध्यक्षा रंजना कोठारी, तेयुप अध्यक्ष दिलीप चावत, सभा मंत्री प्रदीप गंग, अभातेयुप सदस्य कुलदीप कोठारी, सभा के निवर्तमान अध्यक्ष कमल पुगलिया सहित अनेक गणमान्यजनों ने अपने भाव अभिव्यक्त किए। सभा, तेयुप व महिला मंडल द्वारा गीतिका, कन्या मंडल व ज्ञानशाला द्वारा परिसंवाद की प्रस्तुति दी। बीकानेर से पधारी लक्ष्मी बैद ने गीतिका के माध्यम से समा बांधा।

साध्वी मुक्तियशा जी व साध्वी चैतन्ययशा जी ने परिसंवाद प्रस्तुत किया। शासनश्री साध्वी रमावती जी ने आगमों व श्रावकों द्वारा किए गए १८ करोड़ के ऊपर के जाप व गुरुओं की वाणी कैसे महापुरुषों की वाणी साबित होती है, बताया।

साध्वी हिमश्री जी ने पर्वत पाटिया श्रावक समाज के प्रति भावनात्मक बातें बताई। आपका अग्रणी बनने के बाद प्रथम चातुर्मास पर्वत पाटिया पर हुआ। चातुर्मास को सफलतम बनाने का श्रेय सहवर्तिनी साध्वियों व पूरे श्रावक समाज को दिया। आभार ज्ञापन सहमंत्री रमेश ओस्तवाल ने किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री प्रदीप गंग ने किया।

साउथ कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी के चातुर्मास की परिसंपन्नता पर तेरापंथ सभा द्वारा द्विदिवसीय मंगलभावना समारोह का प्रथम चरण तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि मनुष्य विकसित प्राणी है। विकास के तीन सूत्र हैं–आरोग्य, बोधि, समाधि। संयम से बोधि, आरोग्य और समाधि की प्राप्ति होती है। संयम से अनासक्ति का विकास होता है। अनासक्ति का महत्त्वपूर्ण सूत्र है–पदयात्रा। साधुओं के लिए विहार-चर्या को प्रशस्त बताया गया है। संतों का आगमन जहाँ क्षेत्र के लिए सौभाग्य सूचक होता है, वहीं निर्गमन विश्व बंधुत्वता का भाव लिए होता है। मुनिश्री ने आगे कहा कि मंगल भावना विनयशीलता, ग्रहणशीलता, प्रमोद भावना का सूचक है। गुरुदेव की कृपा से पाँच महीने तक ज्ञान अध्यात्म की गंगा बही, आप लोगों ने अच्छा लाभ लिया। लोगों में श्रद्धा भक्ति अच्छी है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि गुरु आज्ञा से आए और अब विहार की तैयारी है। सबसे हम खमतखामणा करते हैं, विदाई सद्गुणों को नहीं अव गुणों को देना। चातुर्मास के बाद धर्माराधना चलती रहे। मुनि परमानंद जी ने कहा कि यहाँ धर्म ध्यान का अच्छा क्रम चला। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विनोद चोरड़िया, तेरापंथ महासभा के पूर्व ट्रस्टी भंवरलाल बैद, तेरापंथ भवन के प्रधान ट्रस्टी तुलसी दुगड़, तेयुप के अध्यक्ष राकेश नाहटा, टीपीएफ के अध्यक्ष प्रवीण सिरोहिया, अणुव्रत समिति, कोलकाता के मंत्री नवीन दुगड़ आदि सभा-संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं गणमान्यजनों ने अपने विचार रखे। तेममं व कन्या मंडल ने प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं की बहनों के मंगल गीत से हुआ। संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री कमल सेठिया ने किया।

सिकंदराबाद

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सफलतम चातुर्मास की संपन्नता पर मंगलभावना समारोह मनाया गया। तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि आज हमें आत्मिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। हमारा भाग्यनगर में चातुर्मासिक आध्यात्मिक प्रवास सफल रहा। यह सफलता परम पावन गुरु कृपा का प्रसाद है। साध्वीश्री जी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं, गौरवशाली हैं, जिन्हें उदीयमान उदितोदित, पुण्य प्रतापी गुरु की सन्निधि प्राप्त है। ऐसे दूरदृष्टा गुरु मिले जो हमारे जीवन की प्रतिपल रक्षा कर रहे हैं।

भाग्यनगर का संपूर्ण श्रावक समाज श्रद्धा समर्पण भावना से समृद्ध है। तेरापंथ का विनीत श्रावक समाज मिला, यह भी हमारा सौभाग्य है, जिनमें गुरु भक्ति, संघ भक्ति घनीभूत है। माता-पिता की उपमा से उपमित श्रावक-श्राविका समाज संत-सेवा में सदैव जागरूक है। सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने अपना दायित्व बखूबी निभाया। वे धीर, गंभीर और शांत प्रकृति के व्यक्ति हैं। संपूर्ण टीम कार्यकारी है। तेममं, तेयुप, टीपीएफ, अणुव्रत समिति, किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला परिवार आदि सभी संस्थाओं ने हर कार्यक्रम को उत्साह के साथ संपादित किया। गुरु इंगित की आराधना, संघ मर्यादा और अनुशासन की विशेष अनुपालना करें, यही हमारी आध्यात्मिक मंगलकामना है।

मंगलभावना के क्रम में चांद बैद, नीलम सेठिया एवं जया बेगवानी ने मंगल गीत प्रस्तुत किया। जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष महेंद्र भंडारी, तेरापंथी सभा, अध्यक्ष बाबूलाल बैद, तेममं अध्यक्षा कविता आच्छा, तेयुप, अध्यक्ष निर्मल दुगड़, टीपीएफ अध्यक्ष पंकज संचेती, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, तेरापंथी सभा के मंत्री सुशील संचेती, संपत नौलखा आदि अनेक जनों ने चातुर्मास को ऐतिहासिक बताते हुए आगामी विहार के प्रति मंगलकामना की। डी०वी० कॉलोनी श्रावक परिवार ने गीत का संगान किया। कन्या मंडल एवं कन्या मंडल संयोजिका ने प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला परिवार के साथ ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन महासभा प्रतिनिधि और तेरापंथी सभा के परामर्शक लक्ष्मीपत बैद ने किया।

वडोदरा

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, वडोदरा में मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। साध्वी मंजुयशा जी ने राजा प्रदेशी का व्याख्यान करते हुए कहा कि वडोदरा तेरापंथ समाज विनीत, धर्मसंघ एवं संघपति के प्रति समर्पित है। फिर राजा प्रदेशी ने मुनि केशी स्वामी के प्रवचन से प्रभावित होकर भगवता प्राप्त कर संयम जीवन धारण किया। इसी तरह इन पाँच मास के चातुर्मास में कई कार्यक्रम हुए। साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने कहा कि वडोदरा तेरापंथ धर्मसंघ की सभी संस्थाओं के सभी सदस्य भी विनीत एवं साध्वीवृंद के इंगित को स्वीकार कर कार्यक्रम में सहभागी बने। आपश्री ने तीनों साध्वीश्री जी एवं वडोदरा तेरापंथ समाज की ओर से साध्वी मंजुयशा जी के श्रम के लिए अनंत कृतज्ञता ज्ञापित की।

सभाध्यक्ष हस्तीमल मेहता, सभामंत्री दीपक श्रीमाल, तेममं अध्यक्षा मंजु श्रीमाल, मंत्री सोनू सेठिया, टीपीएफ अध्यक्ष अजय सुराणा, संयोजक भंवरराज बडोला, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजुभाई मेहता, तेयुप अध्यक्ष हितेष महनोत सहित अनेक गणमान्यजनों ने साध्वीवृंद के ऐतिहासिक एवं सफलतम चातुर्मास हेतु कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम का संचालन हितेष महनोत ने किया।

मंगलभावना समारोह के दूसरे चरण में रात्रि में ज्ञानशाला की नाट्य प्रस्तुति हुई एवं महिला मंडल के गीतिका प्रस्तुत की। शीला बडोला, सुधा समदरिया, प्रगति सुराणा ने अपनी भावना रखी। कन्या मंडल ने पाँच माह के चातुर्मास में साध्वीश्री जी की प्रेरणा से हुए कार्यक्रम की झाँकी नाटिका के द्वारा तेममं सदस्या करुणा भंसाली के गीत के साथ प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन रेणुका छाजेड़ ने किया।

उधना

मुनि उदित कुमार जी का उधना का ऐतिहासिक चातुर्मास परिसंपन्न हुआ। इस अवसर पर तेरापंथी सभा द्वारा मंगलभावना समारोह का आयोजन हुआ। जिसमें आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, सूरत एवं उधना तेरापंथ समाज की विविध संस्थाओं के पदाधिकारियों ने उपस्थित रहकर मुनिश्री की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

इस अवसर पर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि हमें इस बात की खुशी है कि तेरापंथ धर्मसंघ में सभी साधु-साध्वियों के चातुर्मास का निर्णय गुरु ही करते हैं। पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से हमने उधना में चातुर्मास किया। चातुर्मास में करणीय कार्यों की हमने एक योजना बनाई। गुरु कृपा से सभी कार्यक्रम समयबद्ध एवं शत-प्रतिशत सफल रहे। चातुर्मास की सफलता यह टीमवर्क का परिणाम है। हम संतों ने टीमवर्क से कार्य किया है। श्रावक समुदाय ने भी टीमवर्क से कार्य किया। अध्यात्म के क्षेत्र में संतों और श्रावकों का समन्वित सहयोग ही सफलता के शिखरों की ओर ले जाता है।

मुनि अनंत कुमार जी ने कहा कि मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में अनेक ऐतिहासिक कार्यक्रम संपन्न हुए। कोटि जप अनुष्ठान, आरोहण, सती मदनरेखा का जीवन चरित्र, अणुव्रत सर्वधर्म सम्मेलन, जैन विद्या कार्यशाला, ज्ञानशाला शिविर जैसे अनेक कार्यक्रम हुए, जो अभूतपूर्व हैं। इस अवसर पर मुनि रम्य कुमार जी एवं मुनि ज्योतिर्मय कुमार जी भी उपस्थित रहे।

तेरापंथी सभा, उधना के अध्यक्ष बसंती लाल नाहर ने समग्र चातुर्मास के दौरान मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में संपन्न कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। आचार्य महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष संजय सुराणा, महामंत्री नानालाल राठौड़, ट्रस्टी रमेश बोल्या, तेरापंथी महासभा के सहमंत्री अनिल चंडालिया, अणुव्रत विश्व भारती गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, महासभा के उपसभा प्रभारी लक्ष्मीलाल बाफना आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्यजनों ने मुनिश्री के पुरुषार्थ की प्रशंसा करते हुए मंगलभावना प्रस्तुत की।

मंगलभावना समारोह के विविध आयोजन

सरदारपुरा, जोधपुर

तेरापंथी सभा द्वारा साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण तेयुप द्वारा किया गया। तत्पश्चात सभी श्रावक-श्राविका समाज ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। महिला मंडल, कन्या मंडल, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, महिला मंडल मंत्री चेतना घोड़ावत, तेयुप सरदारपुरा मंत्री मिलन बांठिया, टीपीएफ से राजेंद्र मेहता, सरिता बैद, ज्ञानशाला संयोजक बी०आर० जैन, सारिका बाफना आदि ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

साध्वी विद्युतप्रभा जी, साध्वी किरणयशा जी व साध्वी चारित्रप्रभा जी ने श्रावक समाज को जागरूकता बनाए रखने की बात कही। साध्वी कुंदनप्रभा जी ने कहा कि जोधपुर में परम पूज्य गुरुदेव की कृपा से यह पंचमासिक चातुर्मास को संपन्न किया और आज उन्हीं के आशीर्वाद से इस मेघराज तातेड़ भवन से विहार कर रहे हैं। जोधपुर का श्रावक समाज जागरूक है, विनीत है और धर्मसंघ के प्रति श्रद्धावान है। श्रावकों में अध्यात्म के संस्कार इसी प्रकार पल्लवित होते रहें, यही मंगलकामना। कार्यक्रम का संचालन महावीर चोपड़ा ने किया।

इस अवसर पर तेयुप, सरदारपुरा द्वारा सम्यक् दर्शन कार्यशाला में संपूर्ण भारत में कुसुम जैन को प्रथम व चंद्रा जीरावला को द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया। साथ ही परिषद द्वारा भजन मंडली में नियमित रूप से सेवाएँ देने हेतु जितेंद्र गोगड़, सुनील बैद और नरेंद्र सेठिया का भी सम्मान किया गया।

जलगाँव

मुनि डॉ० आलोक कुमार जी का मंगलभावना समारोह अणुव्रत भवन में दो चरणों में संपन्न हुआ। पहले चरण में कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री द्वारा उपस्थित भाई-बहनों से नमस्कार महामंत्र का सामूहिक पाठ करवाकर की गई। महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर मंगलभावना गीत की प्रस्तुति दी।

ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने मुनिश्री के प्रति मंगलभावना प्रकट करते हुए गीत के माध्यम से प्रस्तुति दी। भिक्षु भजन मंडली के सदस्यों ने भी मुनिश्री की विदाई सामरोह में संगीत के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष जितेंद्र चोरड़िया, महिला मंडल कार्यकारी अध्यक्षा विनीता समदरिया, तेयुप अध्यक्ष सुदर्शन बैद, टीपीएफ अध्यक्ष संजय चोरड़िया, भूसावल महिला मंडल मंत्री राजश्री चोरड़िया ने अपने भाव व्यक्त किए।

मुनि लक्ष्यकुमार जी ने तपस्या के महत्त्व को बताते हुए सम्यक् ज्ञान को बढ़ाना व अहंकार को कम करना, सरल भाषा में समझाया। मुनि हिमकुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। मुनि आलोक कुमार जी ने जलगाँव में संपन्न हुए सफलतम चातुर्मास को याद करते हुए कहा कि पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से इस पावस प्रवास में जप, तप, ध्यान, स्वाध्याय का काफी सुंदर क्रम चला। भाई-बहनों ने काफी अच्छा लाभ उठाया। मुनिश्री ने आगे बताया कि अपनी शक्ति का गोपन ना करें, उसका धर्म के लिए सदुपयोग करें।

मनोज सुराणा ने तीनों संतों के प्रति जाने-अनजाने में हुई किसी भी अविनय, अशातना के लिए सामूहिक खमतखामणा करवाई। रात्रिकालीन दूसरे चरण में अणुव्रत मंच के संयोजक पवन सामसुखा व समाज के काफी भाई-बहनों ने अपने मन के भाव मुनिश्री के समक्ष प्रस्तुत किए। ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी। मुनिश्री का मंगल विहार भव्य अनुशासन रैली के साथ रतनलाल सेठिया के निवास पर सानंद संपन्न हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने भरपूर श्रम का नियोजन किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री नीरज समदरिया व जितेंद्र छाजेड़ ने एवं आभार ज्ञापन सहमंत्री रूपेश सुराणा ने किया।

साहूकारपेट, चेन्नई

साध्वी लावण्यश्री जी के चातुर्मास प्रवास की परिसंपन्नता पर मंगलभावना समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ जय तुलसी मंडल से हेमंत डूंगरवाल एवं पूरी टीम द्वारा मंगलाचरण हुआ। समारोह में तेयुप अध्यक्ष दिलीप गेलड़ा, महिला मंडल अध्यक्षा लता पारीख, टंडियारपेट के मुख्य न्यासी पूनमचंद मांडोत, चैन्नई महिला मंडल की पूर्वाध्यक्षा पुष्पा हिरण के पश्चात कन्या मंडल द्वारा सुंदर नाटिका एवं गीतिका के माध्यम से मंगलभावना व्यक्त की गई।

टीपीएफ से अध्यक्ष प्रसन्न बोथरा, सभा के पूर्वाध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, साहूकारपेट ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी विमल चिप्पड़ द्वारा साध्वीश्री जी के प्रति मंगलभावना प्रेषित की गई। उपासक धनराज मालू, अशोक लूणावत एवं किशोर मंडल ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। महिला मंडल द्वारा मंगलभावना समारोह पर नाटिका की प्रस्तुति की गई।

साध्वी सिद्धांतश्री जी एवं साध्वी दर्शितप्रभा जी ने एक साथ अपने भाव व्यक्त करते हुए पहेलियों के माध्यम से सभी कार्यकर्ताओं का विशेष परिचय कराया। साध्वीवृंद द्वारा सबके प्रति मंगलकामना की गई। आचार्य महाश्रमण जैन तेरापंथ विद्यालय, माधावरम के चेयरमैन तनसुखलाल नाहर ने माधावरम स्कूल की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी एवं साध्वीश्री जी के प्रति मंगलभावना व्यक्त की।

सभा अध्यक्ष उगमराज सांड द्वारा चातुर्मास की गतिविधियों एवं प्रवास काल के कार्यक्रमों की जानकारी दी गई एवं समग्र समाज की ओर से कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए खमतखामणा एवं मंगलभावना व्यक्त की। महिला मंडल से मंत्री हेमलता नाहर एवं सभा के संगठन मंत्री चंद्रेश चिप्पड़ ने भी अपनी ओर से मंगलभावना व्यक्त की।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि पाँच माह के चातुर्मास में श्रावक-श्राविकाओं ने सेवा दर्शन का बहुत सुंदर लाभ उठाया। विहार के बाद हर श्रावक अध्यात्म के साथ ऐसे ही जुड़ा रहे, जैसा चातुर्मास के दौरान जुड़ा रहा। साध्वी लावण्यश्री जी ने पूरे श्रावक समाज से खमतखामणा करते हुए सभी के प्रति अपनी मंगलकामना प्रकट की। समारोह सभा के मंत्री अशोक खतंग द्वारा किया गया। अंत में साध्वीश्री जी द्वारा मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अच्छे मानव बनने का संकल्प लें

वडोदरा।

साध्वी मंजूयशा जी अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ वडोदरा के सेंट्रल जेल में पधारी। वहाँ लगभग ७०० कैदियों के बीच अणुव्रत समिति की ओर से कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से आई०पी०एस० जगदीश बांगरवा, वेलफेयर ऑफिसर महेश राठौड़ आदि कई मुख्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया। साध्वी चिन्मयप्रभा जी, साध्वी इंदुप्रभा जी एवं साध्वी मानसप्रभा जी ने सामूहिक अणुव्रत गीत का संगान किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि अणुव्रत सबको मानवता का पावन संदेश देता है। यह एक असांप्रदायिक मिशन है। यह हमें नैतिकता, सद्भावना एवं नशामुक्ति का जीवन जीने की प्रेरणा देता है। साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि आज हमारे सामने कैदी समूह बैठा है। इंसान गलती का पुतला है। जाने-अनजाने में किसी भी प्रकार का छोटा या बड़ा अपराध हो जाता है। उसे अपराध का फल भोगना पड़ जाता है।

क्रोध, अहंकार, माया, लोभ, द्वेष, स्वार्थ, हिंसा, झूठ, चोरी आदि कई कारणों से मानव गलती कर देता है। गलती करना कोई बड़ी बात नहीं। किंतु भविष्य में ऐसी गलती न हो तो व्यक्ति इस बंधन से मुक्त हो सकता है। साध्वीश्री जी ने अणुव्रत अभियान के अंतर्गत नैतिकता, सद्भावना एवं नशामुक्ति पर प्रेरणादायी प्रवचन दिया और कैदियों को मानवता का पवित्र संदेश देते हुए भविष्य में ऐसा कोई अपराध न करने का संकल्प करवाया। साध्वीश्री जी ने ध्यान का भी सामूहिक प्रयोग करवाया।

इस अवसर पर साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। वहाँ के आईपीएस जगदीश बांगरवा, वेलफेयर ऑफिसर महेश राठौड़ एवं वहाँ के जेलर विपुलभाई बारिया ने भी अपने विचार रखते हुए साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष हस्तीमल मेहता, मंत्री दीपक श्रीमाल, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष राजेश मेहता, पूर्व अध्यक्ष संतोष सिंघी, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष पंकज बोल्या, बाल किशन श्रीमाल, संपत मेहता, विनोद समदरिया, स्नेहलता समदरिया आदि कई भाई-बहन उपस्थित थे।

अणुव्रत समिति, वडोदरा की ओर से सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। मुख्य अधिकारियों का अणुव्रत समिति की ओर से साहित्य आदि द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ समाज के संयोजक भंवरलाल बडोला ने किया।

जीवन विज्ञान दिवस का आयोजन

औरंगाबाद।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में जीवन विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित 'महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस' त्रिदिवसीय समारोह मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि अर्हत कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। मुनिश्री ने कहा कि जीवन तो सभी जीते हैं, जीवन जीने की कला सीखनी चाहिए। एक जीवन जीता है शंकर की तरह, एक जीता है कंकर की तरह। जितनी बड़ी सोच होती है, वह व्यक्ति उतना ही आगे बढ़ता है। मुनिश्री ने प्रामाणिकता, नैतिकता, नशामुक्ति को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। माता-पिता सिर्फ जन्मदाता ही नहीं, संस्कार दाता और जीवन निर्माण दाता भी होते हैं।

ज्ञानशाला के बचपन के संस्कार पचपन से भी आगे तक चलते हैं। अभिभावकों को बच्चों को ज्ञानशाला में भेजने की प्रेरणा दी। मुनिश्री के मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

✦ *जहाँ अहिंसा होती है, संयम होता है, वहाँ पर्यावरण की सुरक्षा स्वतः हो सकती है। बिजली, पानी का अपव्यय नहीं करना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ कर्मवाद आस्तिक विचारधारा का महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। दो प्रकार की विचारधाराएँ हैं - आस्तिक व नास्तिक।

आचार्य श्री महाश्रमण

ज्ञानशालाओं के वार्षिक उत्सव का हुआ आयोजन

मालवीय नगर, जयपुर।

शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, जयपुर के तत्त्वावधान में जयपुर ज्ञानशालाओं का वार्षिकोत्सव मनाया गया। साध्वीश्री द्वारा समुच्चारित नवकार मंत्र के बाद ज्ञानार्थी प्रतीक लोढ़ा ने मंगल संगान किया। जयपुर की चारों ज्ञानशालाओं–अणुविभा, श्याम नगर, विद्याधर नगर व मिलाप भवन ने उत्साह के साथ अपनी सहभागिता दर्ज की।

शासन गौरव साध्वीश्री जी ने ज्ञानशाला जैसे प्रत्येक प्रकल्प के पुरस्कर्ता आचार्य श्री तुलसी को नमन करते हुए कहा कि भावी पीढ़ी को संस्कारित करने के लिए ज्ञानशाला का उपक्रम बहुत जरूरी है। नई पौध के सम्यक् सिंचन से समाज उन्नत बन सकता है। ज्ञानार्थियों को प्रेरणा देते हुए कहा कि मीठा व सार्थक बोलें तथा ज्ञानवान बनने के साथ विवेकसंपन्न बनने का संकल्प करें।

ज्ञान वाटिका की प्रशिक्षिकाओं व संरक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि ज्ञानार्थियों को आधुनिक, वैज्ञानिक आधार पर प्रशिक्षण देना चाहिए तथा साथ ही जीवन जीने की कला भी सिखाएँ। पुरानी गीतिकाएँ कंठस्थ व तत्त्वज्ञान अच्छा हो तो छोटे-छोटे बच्चे बहुत आगे बढ़ सकते हैं। आपने आगे कहा कि ज्ञानशाला का दिनोंदिन अभ्युदय होता रहे तथा आचार्यश्री महाश्रमण जी की परिकल्पना साकार रूप बन पाए।

सभा अध्यक्ष हिम्मत डोसी ने स्वागत वक्तव्य दिया। ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजिका सरिता बरड़िया ने ज्ञानशाला की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। सभी प्रशिक्षिकाओं ने सामूहिक गीतिका द्वारा प्रस्तुति दी। अनेक अभिभावकों ने ज्ञानशाला जाने से अपने बच्चों में आए सकारात्मक परिवर्तनों को बताते हुए अन्य अभिभावकों को भी अपने बच्चों को ज्ञानशाला भेजने की प्रेरणा दी। पूर्व ज्ञानार्थी तृप्ति जूनीवाल ने ज्ञानशाला के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अपने जीवन में आए सद्सुस्कारों व अनुभव को साझा किया।

चारों ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने २५ बोल पर आकर्षित प्रोजेक्ट बनाए तथा लघु नाटिका द्वारा प्रस्तुतियाँ दी। अणुविभा ज्ञानशाला ने ६ लेश्या नाटक द्वारा भावों को निर्मल रखने की सीख दी। मिलाप भवन ज्ञानशाला ने नव तत्त्वों को नाटक द्वारा नवीन शैली में समझाया। विद्याधर नगर ज्ञानशाला ने चार गति को आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया तथा श्यामनगर ज्ञानशाला ने मिथ्यात्व के १० प्रकार नाटक द्वारा सम्यक्त्व को दृढ़ रखने की प्रेरणा दी। ज्ञानार्थी हर्षिता दुगड़ ने मारवाड़ी भाषा में रोचक वक्तव्य दिया। श्यामनगर ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने ज्ञानार्थी फैंसी ड्रेस में नयनाभिराम लगा रहे थे।

ज्ञानार्थी नेहल धारीवाल, इशित बोथरा, निहिका जैन, सिया बरड़िया, हमिशा श्यामसुखा, अक्षत शाह, तन्वी संचेती, प्रतीक लोढ़ा, व गौरव बरड़िया आदि ने गीतिका द्वारा प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष व मंत्री द्वारा प्रशिक्षिकाओं का मोमेंटो व सार्टिफिकेट देकर सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री सुरेंद्र सेखानी ने किया। अणुविभा ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं राजरानी जैन तथा प्रीति बरड़िया ने मंच का संचालन किया।

जैन वर्ल्ड रोचक प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर।

मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में जैन वर्ल्ड प्रतियोगिता का आयोजन तेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा किया गया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि जैन वर्ल्ड यानी जैन भूगोल। यहाँ लोक की बात हो रही है। जिसमें छह द्रव्य प्राप्त हैं, वह लोक कहलाता है। लोक आकाश का एक बहुत छोटा-सा भाग है। आलोक की तुलना में लोक बहुत ही छोटा है, पर छोटा होकर भी दूसरी दृष्टि में बहुत बड़ा है, क्योंकि अनंत-अनंत जीव और पुद्गल इस लोक में समाए हुए हैं। मुनिश्री ने कहा कि जैन वर्ल्ड कार्यक्रम की परिकल्पना भरत बोथरा ने की, अच्छा श्रम किया, अच्छे ढंग से लोक के बारे में समझाया और इस पर आधारित प्रश्नोत्तरी का रोचक ढंग से आयोजन किया।

कार्यक्रम में लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। मुनि काव्य कुमार जी का निर्देशन रहा। सभी का स्वगात करते हुए अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने भरत का परिचय दिया। सबको प्रतियोगिता के लिए राकेश ने शुभकामनाएँ दी। किशोर मंडल सह-संयोजक चेतन गांधी ने भी स्वागत किया।

कार्यक्रम की शुरुआत मुनि दीप कुमार जी द्वारा प्रदत्त मंत्रोच्चार से हुआ। कार्यक्रम के एंकर का दायित्व तेयुप के कार्यकारिणी सदस्य एवं उपासक भरत बोथरा ने निभाया। सभी सहभागी टीम को प्रतियोगिता के नियम और निर्देशों की जानकारी देते हुए संचालन किया। प्रतिभागी टीमों के सभी संस्थाओं–सभा, परिषद, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल के सदस्यों की सहभागिता रही।

कार्यक्रम के प्रायोजक मनोहर लाल, राकेश, मुकेश, दर्शन, चिरायु बाबेल रहे। जैन वर्ल्ड प्रतियोगिता में 'वैताढ्य पर्वत' टीम प्रथम रही। दूसरे स्थान पर 'ऐरावत' टीम और तीसरे स्थान पर 'गंगा' टीम रही। सभी प्रतिभागियों सहित विजेता टीम के सभी सदस्यों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में अभातेयुप साथी विकास बांठिया, तेयुप पूर्व अध्यक्ष राकेश दुधोड़िया, निवर्तमान अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा, सहमंत्री रौनक चोरड़िया, गणमान्यजन, विजयनगर श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। किशोर मंडल सदस्य दर्शन, अरविंद पोरवाल, रिदम चावत का अच्छा श्रम रहा। कार्यक्रम संयोजक विशाल श्यामसुखा ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का समापन मुनिश्री के मंगलपाठ से हुआ।

✦ *ऐसे कार्यकर्ता भी अपने आपमें साधुवाद के पात्र होते हैं, जो निःस्वार्थ भाव से जनता की नैतिक सेवा करने का प्रयास करते हैं और अपनी शक्ति का नियोजन इस पवित्र सेवा कार्य में करते हैं।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

संतों का मिलन देता है मधुरता का संदेश

विजयनगर।

बैंगलुरु के न्यू गुडदल्ली, मैसूर रोड-टोल गेट में मुनि हिमांशु कुमार जी और मुनि दीप कुमार जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। बड़ी संख्या में बैंगलुरु का श्रावक समाज उपस्थित था। मुनि हिमांशु कुमार जी ने कहा कि संतों का यह मिलन मधुरता का संदेश देता है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें तेरापंथ शासन मिला है, ऐसे दृश्य हमारे संघ में उपस्थित होते हैं। एक-दूसरे के प्रति विनय और वात्सल्य का आदान-प्रदान होता है।

मुनि दीप कुमार जी में विद्वता भी है, विनम्रता भी है। मुनि दीप कुमार जी, मुनि राकेश कुमार जी स्वामी जैसे विशिष्ट संतों की सेवा में रहे हुए हैं, उनकी कुछ छवि इनमें देखने को मिलती है। काव्य मुनि में अच्छी प्रतिभा है। हमारे संघ के विशिष्ट संत बनें, ऐसी आध्यात्मिक कामना करता हूँ। बैंगलुरु का श्रावक समाज भी श्रद्धालु है।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि बड़े भाग्य से हमने यह जिनशासन पाया है और उसमें भी तेरापंथ सा संघ मिला है मानो तरुवर की छाया प्राप्त हो रही है। आचार्यश्री महाश्रमण जैसे गुरुवर प्राप्त हैं। मुनि हिमांशु कुमार जी स्वामी श्रमशील संत हैं। गांधीनगर में ऐतिहासिक चातुर्मास करके पधारे हैं। मुनि हेमंत जी भी कर्मठ हैं।

आज मुनिश्री का यहाँ पधारना हुआ है। मैं मुनिश्री का स्वागत करता हूँ। एक ही शहर में बहुत सौहार्दपूर्ण वातावरण में दो चातुर्मास हुए। मनोहरलाल बाबेल परिवार सौभाग्यशाली है, ऐसे अद्भुत संत मिलन का प्रसंग उनके मकान में हो रहा है। मुनि हेमंत कुमार जी और मुनि काव्य कुमार जी ने भावपूर्ण उद्गार प्रगट किए।

कार्यक्रम में बैंगलुरु तेरापंथी सभा अध्यक्ष कमल दुगड़, तेरापंथी सभा, विजयनगर के अध्यक्ष प्रकाश गांधी, अनीशा बाबेल, अक्षरा बाबेल ने भी विचार प्रकट किए।

दृढ़ विश्वास द्वारा हर कार्य को किया जा सकता है फतेह

चंडीगढ़।

मनुष्य को सदैव परीक्षा करके अपनी बुराइयों को हटाकर, श्रेष्ठ सद्गुणों को अपने भीतर धारण करना चाहिए। व्यक्तियों मे भिन्न-भिन्न प्रकार के दुर्गुण पाए जाते हैं और उसी प्रकार समाज में दुर्जन व्यक्ति भी होते हैं। इन दोनों को दूर रखना चाहिए। अपने मन के विकारों को रोकना और दूर करना हमारा व्यक्तिगत कार्य है। अगर हम ऐसा न करेंगे तो इससे हमको ही हानि उठानी पड़ेगी, क्योंकि विकार युक्त भावनाओं और कार्यों से कभी स्थायी लाभ अथवा कल्याण की प्राप्ति नहीं हो सकती। इस प्रकार समाज में पाए जाने वाले दुर्जन व्यक्तियों का नियंत्रण सब लोगों को मिलकर सामुदायिक रूप से करना चाहिए। यह विचार मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने व्यक्त किए।

मुनिश्री ने कहा कि जब हम किसी वस्तु, पदार्थ को पाने के लिए चेष्टा करते हैं तभी हम तनाव की स्थिति अपने भीतर उत्पन्न कर लेते हैं। तनाव और मुक्ति का परस्पर जुड़ाव है केवल इतना करना आवश्यक है कि तनाव को यदि हम काबू कर लें तो हम सहज भाव से हर समस्या को हल कर सकते हैं।

नि:शुल्क जाँच कैंप का आयोजन

हनुमंतनगर।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एंड डेंटल केयर श्रीनिवासनगर के चतुर्थ वर्षगाँठ व पुनीत राजकुमार की द्वितीय पुण्यतिथि पर नि:शुल्क जाँच कैंप का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न प्रकार के १६ टेस्ट किए गए। ३५ लोगों ने इसका लाभ लिया। डॉ० सुषमा, डॉ० अर्शिया, डॉ० मेघा, लैब टेक्निशियन अग्नेस, हाउसकीपर महादेवम्मा का विशेष योगदान रहा।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष अंकुश बैद, निवर्तमान अध्यक्ष महावीर चावत, उपाध्यक्ष महावीर कटारिया, सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे।

प्राणी मात्र के प्रति मैत्री भाव रखने वाले अभयमूर्ति थे महावीर : आचार्यश्री महाश्रमण

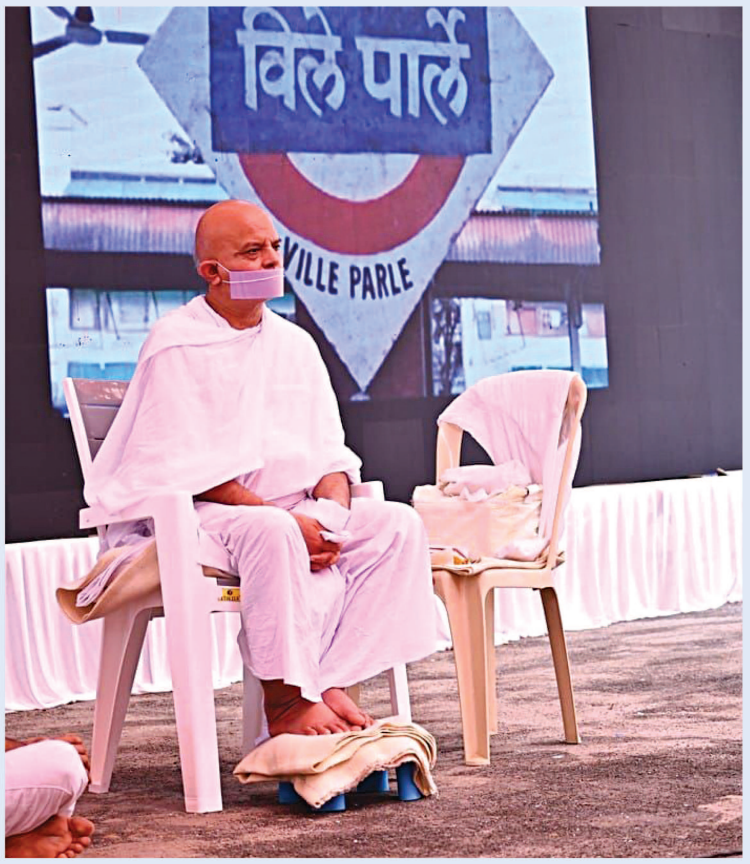

विलेपारले, ७ दिसंबर, २०२३

परम पूज्यप्रवर आज प्रातः अंधेरी से विहार कर मुंबई के उपनगर विलेपारले पधारे। महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आज मिगसर कृष्णा दशमी भगवान महावीर का दीक्षा कल्याणक दिवस है। वर्द्धमान ने गृहस्थ का त्याग कर साधुता की भूमिका पर आरोहण किया था।

हमारी दुनिया में महापुरुष भी यदा-कदा होते हैं। गीता में कहा गया है कि जब धर्म की ग्लानि होती है, अधर्म का उत्थान हो जाता है, जब-जब मैं अवतार लेता हूँ। यह कृष्ण की भाषा है। साधुओं, सज्जनों व धर्म की रक्षा के लिए मैं युग-युग में अवतार लेता हूँ। यह बात अलग है कि अवतार होता है या नहीं।

भगवान महावीर इस दुनिया में मनुष्य के रूप में आए। वे भी अवतरण कर देवलोक से आए थे। उनमें कुछ विशिष्टता थी। माँ के गर्भ में थे तभी गहरा चिंतन किया था। उनका माता-पिता के प्रति भक्ति-अनुराग था। माता-पिता की मृत्यु के बाद ही दीक्षा ली थी। सर्व सावद्य प्रवृत्ति का त्याग कर दिया था।

वो आत्मा धन्य हो जाती है, जो साधुत्व-संन्यास को ग्रहण कर लेती है। लगभग साढ़े बारह वर्षों तक उन्होंने विशेष साधना की। वे अभय के मूर्ति-पुरुष थे। साधक तो सबके साथ मैत्री रखने वाला होता है। उसका दूसरा जीवन क्या बिगाड़ सकता है। चाहे चंडकौशिक हो, शूलपाणि यक्ष हो या संगम देव।

लगभग तीस वर्ष तक वे तीर्थंकर काल में रहे और जन-जन का कल्याण किया। उनका आयुष्य ज्यादा दीर्घ नहीं था। आयुष्य से ज्यादा महत्त्व उच्च स्तर के जीवन जीने का है। वे परम जीवी, अध्यात्म जीवी थे। भगवान महावीर इस अवसर्पिणी काल के अंतिम चौबीसवें तीर्थंकर थे।

उनके संदेश हमें आगमों में प्राप्त है। जैन आगमों में अहिंसा, संयम और तप की बात आई है। भगवान महावीर अहिंसामूर्ति, संयममूर्ति और तपोमहामूर्ति के रूप में स्थित थे। उन्होंने जनोपकार का कार्य भी किया था।

गौतम स्वामी के कितने प्रश्नों के उत्तर दिए थे। लगभग ७२ वर्ष का आयुष्य पूर्ण कर उनका निर्वाण हुआ था। यह वर्ष उनके निर्वाण का २५५०वाँ वर्ष है। उनमें जो साधना थी वो साधना हमारे में भी जितने अंशों में आ सके आए। उनके ज्ञान रूपी समुद्र की बूँदें भी कुछ हमारे भीतर आएँ।

आज विलेपारले आए हैं। बहुश्रुत परिषद के संयोजक मुनि महेंद्र कुमार जी की यह महाप्रयाण भूमि है। उनके सहवर्ती संत यहाँ हैं। ये भी खूब विकास करते रहें। मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि जागृत कुमार जी, मुनि सिद्धकुमार जी ने मुनि महेंद्र कुमार जी के संस्मरण बताए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आज के दिन पूज्यप्रवर ने बीदासर में तेरापंथ के नए इतिहास का सृजन किया था। ४३ दीक्षाएँ प्रदान कराई थीं। वह दीक्षा महोत्सव विलक्षण था। हम मानसिक रूप से अहिंसक बन भगवान महावीर के सिद्धांतों को जीवन में उतारने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्थानीय विधायक पराग अलवणी, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, स्वागताध्यक्ष शांतिलाल कोठारी, तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप अध्यक्ष अरविंद कोठारी, मेघराज धाकड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञान का एक सशक्त माध्यम है भाषा : आचार्यश्री महाश्रमण

अंधेरी, ६ दिसंबर, २०२३

वृहत मुंबई के उपनगरों की यात्रा के तहत अंधेरी प्रवास का चौथे दिन अज्ञान रूपी अंधकार को ज्ञान का दीप जलाकर दूर करने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में भाषा का प्रयोग होता है, लेखन और बोलने के रूप में भाषा प्रयुक्त होती है।

ज्ञान का एक सशक्त माध्यम भाषा है। ग्रंथों में भाषा के माध्यम से अनेक ज्ञान की बातें लिखित होती हैं। प्रवचन-भाषण से भी ज्ञान का आदान-प्रदान हो सकता है। भाषा विकसित प्राणी होने का एक साक्ष्य हो सकता है।

शास्त्रकार ने कहा है कि आदमी झूठ न बोले। आदमी अपने या निकटतम लोगों के लिए झूठ बोल सकता है। उसका कारण है–क्रोध व भय। वैसा मृषा नहीं बोलना चाहिए। झूठ से बचकर रहना बड़ी बात है। हँसी-मजाक, स्वार्थ-लोभ या डर के कारण झूठ बोला जा सकता है। द्वेष वश भी झूठा आरोप लगाया जा सकता है। हम किसी पर भी झूठा आरोप न लगाएँ।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि संकल्प शक्ति से व्यक्ति अपने आपको बदल सकता है। वह आचरणीय बन सकता है। हमारे भीतर अनंत शक्ति है। स्वयं को बदलने से मनुष्य जन्म को सार्थक बना सकते हैं। शक्ति का ज्ञान कराने वाले गुरु होते हैं। वे आत्मा का ज्ञान देने वाले होते हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अंधेरी के विधायक अमीर सादम ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। फिल्म जगत से जुड़े कलाकारों, नगर प्रमुखों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। प्रभुदास लीलाधर की चेयरमैन अमीषा बोहरा, पन्नालाल दुगड़ ने भी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने आश्रव व संवर को समझाया।

मेगा स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

चेन्नई।

तेरापंथ जैन विद्यालय पट्टालम के प्रांगण में तेरापंथ एजूकेशनल एंड मेडीकल ट्रस्ट एवं तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के संयुक्त तत्त्वावधान में विद्यालय की सिल्वर जुबली वर्ष के अवसर पर सघन स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया।

मेगा हैल्थ चैकअप कैंप का शुभारंभ ईश वंदना से किया गया। तत्पश्चात विद्यालय चेयरमैन एम०जी० बोहरा ने इस शिविर के फायदे छात्रों एवं शिक्षकों को समझाए। प्रधानाचार्या आशा क्रिस्टी ने स्वागत भाषण दिया। सिल्वर जुबली समिति के मुख्य संयोजक माणकचंद डोसी ने अपने विचार व्यक्त किए एवं शिविर में भाग लेने का आग्रह किया। तेयुप अध्यक्ष दिलीप गेलड़ा ने भी अपने विचार रखे। मेडिकल समिति संयोजक विकास सेठिया, तेयुप सहमंत्री सुनील मूथा एवं प्रदीप सुराना की भूमिका सराहनीय रही।

इंडिया विज़न आई हॉस्पिटल की तरफ से ५७५ छात्रों एवं शिक्षकों की नेत्र जाँच की गई। करपागम दंत चिकित्सालय के द्वारा ६८० छात्र एवं शिक्षकों की दंत चिकित्सा की गई। ईसीजी के साथ-साथ रक्त की जाँच भी की गई।

इस अवसर पर स्कूल चेयरमैन एम०जी० बोहरा, ज्वाइंट सेकेट्री कमलेश नाहर, संवाददाता संजय भंसाली सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

तेयुप द्वारा सेवा कार्य

राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा बैंगलोर से ३५ किलोमीटर दूर नेलमंगला स्थित सोंडेगोपा गाँव में 'जनस्नेही चैरिटेबल ट्रस्ट' में स्व० लादूलाल गन्ना की प्रथम पुण्य स्मृति में पारिवारिक सदस्यों के सहयोग से ट्रस्ट में दैनिक जरूरत का राशन, सामग्री प्रदान की गई। परिषद परिवार द्वारा सामूहिक नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया गया। ट्रस्ट के वार्डन योगेश ने ट्रस्ट की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि आश्रम विगत ७ वर्षों से गतिमान है जिसमें लगभग १२० वृद्ध प्रवासित हैं। परिषद परिवार का धन्यवाद व्यक्त किया।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने अपने विचार व्यक्त किए एवं मुकेश गन्ना ने परिषद परिवार के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया। इस अवसर पर नवसारी से आए खेमराज मेहता, तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष अरविंद गन्ना, राजेश देरासरिया, जयंतीलाल गांधी एवं सेवा सारथी के संयोजक मुकेश भंडारी एवं विक्रम बोहरा की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
18-24 दिसंबर, 2023

✦ इंद्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

आचार्य श्री महाश्रमण

मोक्ष तभी मिलेगा जब आत्मा निर्मल बन जाएगी : आचार्यश्री महाश्रमण

सांताक्रुज, ८ दिसंबर, २०२३

माया नगरी, मुंबई के उपनगरों की यात्रा करते हुए शांतिदूत आज सांताक्रुज प्रवास हेतु पधारे। सांताक्रुज मुंबई के एयरपोर्ट का केंद्र है। यहाँ पूज्यप्रवर का चार दिवसीय प्रवास होने जा रहा है।

आर्हत् वाङ्मय के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी की वर्षा करते हुए फरमाया कि अध्यात्म का सिद्धांत है कि आत्मा शाश्वत तत्त्व है। आत्मा हमेशा थी, है और रहेगी। संसार में भ्रमण करने वाली जो आत्माएँ हम हैं, वह कर्मों से युक्त है। बहुत सी आत्माएँ मलिन होती हैं। मोक्ष तभी होगा जब आत्मा निर्मल बन जाएगी। सर्वदुःख मुक्ति तभी होगी जब आत्मा पूर्णतया कर्ममुक्त हो जाएगी।

शास्त्रकार ने बताया है कि आत्मा को निर्मल बनाने के लिए स्वाध्याय करो। दूसरा उपाय बताया–ध्यान करो। दुनिया में अनेक जगह योग-ध्यान के केंद्र भी चलते हैं। ध्यान एक साधना का प्रयोग है। साधु के लिए तो ये अनिवार्य है, पर गृहस्थ भी ध्यान-स्वाध्याय का अपने जीवन में प्रयोग करे।

अनेक ध्यान पद्धतियाँ हैं। हमारे यहाँ आचार्यश्री तुलसी के समय आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के योग से प्रेक्षाध्यान का प्रादुर्भाव हुआ, जो आज प्रसिद्धि को प्राप्त है। प्रवृत्ति के साथ निवृत्ति का भी अभ्यास करें। शरीर, वाणी और मन की चंचलता को कम कर निर्विचारता का प्रयास करें।

मन तो दुष्ट घोड़ा है, जो हर समय दौड़ता रहता है, इस पर लगाम लगाने का प्रयास करें। अभ्यास से मन पर कंट्रोल किया जा सकता है। वैराग्य भाव के साथ निरंतरता एवं श्रद्धा के समन्वय से ध्यान का प्रयोग व्यक्ति को अध्यात्म साधना पथ पर आगे बढ़ा सकता है, सर्वदुःख मुक्ति तक पहुँचा सकता है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है, शांतिपूर्ण जीवन। भौतिक संसाधनों से शांति उपलब्ध नहीं होती। शांति तो अपने भीतर है। जो व्यक्ति इच्छाओं की सीमा कर निस्पृह बन जाता है, ममत्व से रहित हो जाता है, वह शांति को प्राप्त कर सकता है। एस० एन०डी०टी० कॉलेज से उज्ज्वला राउत एवं स्थानीय सभाध्यक्ष राजेंद्र नौलखा ने श्रीचरणों में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**